'जागीरदार' के बारेमें

मालवेका प्रदेश संपूर्णतया देशी रियासतोंसे व्याप्त है। जबकि दुनियाँके अधिकांश देश स्वाधीनता एवं प्रजासत्ताके आदर्शोंको बहुत कुछ अपना चुके हैं; वहाँ—भारतवर्षकी ५६० देशी रियासतोंमें—हमारे देशके लगभग एक-तिहाई हिस्सेमें रहनेवाली प्रजाको आज भी अपने निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी और शासक उनकेहस्तकों द्वारा नृशंस अत्याचार, घोर अपमान और भीषण शोषणका शिकार बनना पड़ रहा है। देशी रियासतोंके अन्तर्गत हजारों जागीरें हैं, जो इस बीसवीं सदीमें भी अनियंत्रित राज्यसत्ताके सबसे उत्कृष्ट नमूने हैं। वहाँ न तो कोई उत्तरदायी शासन-प्रणाली है, न यथोचित न्यायदानकी व्यवस्था है, और न प्रजाके मौलिक एवं नागरिक अधिकारोंकी रक्षाका कोई प्रश्न! वहाँ शासकने जो कुछ कह दिया, वही क़ानून है; और जो कुछ कर दिया, वही शासन है। इन बातों को मद्देनजर रखनेपर, राजा-महाराजाओं, ठाकुरों तथा ठिकानेदारोंसे अभिभूत मालवेके जीवनका 'जागीरदार' के अतिरिक्त और कौन-सा प्रतीक उपस्थित किया जा सकता है? 'जागीरदार' में जागीरदार और उसके हस्तकों द्वारा निरीह प्रजापर किस प्रकार अत्याचार किया जाता है, उसके कारण प्रजामें घोर असंतोष फैलकर वह किस प्रकार जागृत होता है, तथा किस प्रकार वह अपने आन्दोलन द्वारा जागीरके मालिकोंके निरंकुश एवं मनमाने शासनकालमें हलचल पैदा करती है; आदि बातोंका सजीव एवं ज्वलन्त चित्र देनेका प्रयत्न किया गया है।

★

जागीरदार

[तीन अंकोंका सामयिक सामाजिक नाटक]

डा० नारायण विष्णु जोशी, एम. ए., डी. लिट्.

प्रधानाध्यापक—दर्शन-विभाग रामनारायण रुइया कालेज, बम्बई

और

श्री जयराम विष्णु जोशी, एम. ए., उज्जैन

— प्राप्ति-स्थान —

रुस्तम बिल्डिंग, २६ चर्चगेट स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

सूचनाएँ

(१) 'जागीरदार' आर्थिक-लाभकी दृष्टिसे स्टेजयोग्य और फि
करने लायक है।

(२) नौसिखिये, संघ, और सार्वजनिक संस्थाएं समारंभ तथा विशे
अवसरोंपर इसे खेल सकती हैं।

(३) अन्य भाषाओंमें यह नाटक अनुवाद करनेयोग्य है।

लेकिन

इन तीनों के लिये लेखक से अनुमति और अधिकार ले
आवश्यक है।

'जागीरदार' नाटक विभिन्न परीक्षाओं और शिक्षण-संस्थाओं
पाठ्यक्रमों भी रखने लायक है।

हिन्दी ज्ञान मन्दिर ग्रन्थावली

(२)

जा गी र दा र

नाटकके पात्र

१.	राजल	एक हरिजन स्त्री
२.	सुखलाल	राजलका भाई
३.	समुन्दरसिंग	जागीरदारका एक हस्तक
४.	भैरूलाल	राजलका पति
५.	फ़क़ीर	... ...
६.	बा	राजलका ससुर
७.	महाराज	जागीरदारका उपाध्याय
८.	कामदार	जागीरदारका मंत्री
९.	जागीरदार	... ...
१०.	मोत्या	जागीरदारका नौकर
११.	पुलिस सुप्रिंटेंडेंट	... ...
१२.	मुहर्रिर	... ...
१३.	सिपाही	... ...

प्रस्तावना

'जागीरदार' मेरी प्रकाशमें आनेवाली प्रथम नाट्यकृति है।

'जागीरदार' की मूल भाषा 'मालवी' है। जहाँ तक मैं जानता हूँ 'मालवी' में साहित्य सृष्टि अभी तक बहुत कम हुई है। अतः 'मालवी' बोलीको सबसे पहले भाषामें परिणत करनेका सेहरा 'जागीरदार' के सिर पर ही बाँधना होगा।

'मालवी' हिन्दीकी ही एक बोली है। कवि-कुल-गुरु कालिदासकी उज्जयिनीके इर्द-गिर्द वह काफी बड़े क्षेत्रमें बोली जाती है। वह, जैसा कि पाठक पायेंगे, मीराकी 'राजस्थानी' के बहुत निकट है और मैं समझता हूँ कि हिन्दीकी अन्य बोलियोंकी अपेक्षा वह उसके बहुत ही समीप है। हिन्दी जाननेवालेको अधिक प्रयासके बिना पहली बार ही वह समझमें आ सकती है।

सारा का सारा नाटक 'मालवी' में नहीं है। एक तिहाईसे भी अधिक वह 'हिन्दोस्तानी' में है। नाटक दृश्य-काव्य है। इसलिये 'जागीरदार' को सारे हिन्दी जनताके सामने लानेके लिये, मैंने फुटनोटमें उसके मालवी अंशको हिन्दीमें अनूदित कर दिया है। यद्यपि यह सच है कि जीवनकी ऊष्मा और हृदयके बोल, जैसे—मालवीमें मिलेंगे, वैसे उसके हिन्दी अनुवादमें नहीं मिल सकेंगे; तथापि यदि हम यह समझ लें कि नाट्य-वस्तुका सौन्दर्य उसकी भाषाकी अपेक्षा घटनाओं पर अधिक निर्भर रहता है, तो इस दृष्टिसे उसका अनुवाद संभवतः मालवीसे अनभिज्ञ नाट्यरसिकोंकी अपेक्षा को भंग नहीं होने देगा।

मालवेका प्रदेश संपूर्णतया देसी रियासतोंसे व्याप्त है। जबकि दुनियाँके अधिकांश देश स्वाधीनता एवं प्रजासत्ताके आदर्शोंसे बहुत कुछ [illegible] हुवे हैं, वहाँ भारतवर्षकी ५६० देसी रियासतोंमें—हमारे देशके लगभग एक तिहाई हिस्से में रहनेवाली प्रजाको आज भी अपने निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी शासकों और उनके [illegible] द्वारा नृशंस अत्याचार, [illegible] [illegible] और भीषण शोषणका शिकार बनना पड़ रहा है। देसी रियासतें

के अन्तर्गत हज़ारों जागीरें हैं, जो इस बीसवीं सदीमें भी अनियंत्रित राजसत्ताके सबसे उत्कृष्ट नमूने हैं। वहाँ न तो कोई उत्तरदायी शासन-प्रणाली है, न यथोचित न्यायदानकी व्यवस्था है, और न प्रजाके मौलिक एवं नागरिक अधिकारोंकी रक्षाका कोई प्रश्न। वहाँ शासकने जो कुछ कह दिया। वही कानून है, और जो कुछ कर दिया वही शासन है। इन बातोंको मद्देनज़र रखनेपर, राजा-महाराजाओं, ठाकुरों तथा ठिकानेदारोंसे अभिभूत मालवेके जीवनका 'जागीरदार' के अतिरिक्त और कौन-सा प्रतीक उपस्थित किया जा सकता है?

'जागीरदार' में जागीरदार और उसके हस्तकों द्वारा निरीह प्रजापर किस प्रकार अत्याचार किया जाता है, उसके कारण प्रजामें घोर असंतोष फैलकर वह किस प्रकार जागृत होती है, तथा किस प्रकार वह अपने आन्दोलन द्वारा जागीरके मालिकोंके निरंकुश एवं मनमाने शासनक्रममें रुकावट पैदा करती है, आदि बातोंका सजीव एवं ज्वलंत चित्र देने का प्रयत्न किया गया है। वह कहाँ तक सफल हो गया है, यह बतलाने की ज़िम्मेवारी मैं सर्वथा [illegible] सहृदय पाठकों एवं दर्शकोंपर सौंपता हूँ।

अंक पहला

जागीरदार

अंक पहला

(**स्थान**—एक काश्तकारका झोंपड़ा। सामनेके आँगनके पीछे बांई ओर एक ओटली, जो स्टेजके आधे हिस्सेसे भी कम है। ओटलीकी दीवार ज़मीनसे दो फुट ऊँची है। दाहिनी ओर सामने एक दरवाजा, जिसमेंसे कुछ अनाज रखनेकी कोठियाँ, टोपले, फटे हुए गोदड़े रखे हुए दिखलाई देते हैं। आँगनमें बाँई ओर एक खाट खड़ी की हुई रखी है।

जब परदा खुलता है, तब राजल ओटलीमें बांई ओर चक्कीपर आटा पीसती रहती है। पीसते समय उसकी पीठ प्रेक्षकोंकी ओर होती है। वह नीले रंगकी पिछोड़ी और उसी रंगका लहँगा पहने हैं। लहँगा उसके लिए कुछ ओछा है। उसके हाथोंमें मालवी औरत जैसी चूड़ियाँ और पैरोंमें कड़े हैं। छातीमें कांचुली पर एक खुंगाली होती है। चक्की पीसते हुए राजल यह गीत गाती है।)

राग—विहाग, ताल दादरा

कातिक आयो तो बी नी आयो लेवाने वीरराज[१]
थारा साम्हू[२] नी भूली सावण आंवो[३] वीरराज ॥
दशेरो गयो दीवाली आई जोऊँ[४] थारी वाट।
अत्रा[५] में क्यों भूल्यो रे भलां, बेना[६] के वीरराज
थारा नाम आंबा राख्या, राख्या मीठा बोर
थारा नाम काचरा[७] छोड्या म्हारा वीरराज ॥
हूँ तो पंछी पींजराके मांय, पाँखा फड़फड़ाय
कागो बुलाई सगुन पूछूँ थारो वीरराज ॥
माईका जाया सद्दी[८] आजे चूनर[९] लाजे चार।
थारा पाखर[१०] वे के सुणाऊँ दुखड़ो वीरराज ॥

---

(१) भाईके लिए प्यारका शब्द। (२) तेरे लिए (३) सावनमें आमपर झूला नहीं झूली। (४) देखूँ (५) इतनेमें। (६) बहन। (७) फल विशेष। (८) जल्दी। (९) साड़ियाँ। (१०) बिना।

(जब गानेके तीन चरण शेष रह जाते हैं, तब राजलका भाई मुकलाल आता है। उसकी उम्र लगभग १५ वर्षकी है। उसका पहराव देहाती लड़कों जैसा नहीं है। वह सिरसे पैर तक सफेद खादीकी ड्रेस पहने है—गांधी टोपी, बंगाली फैशनका कुरता और पाजामा। वह दबे पैर आकर [illegible]के पास खड़ा हो जाता है और गानेके पिछले चरणोंको बहुत सावधानीसे सुनता है। उसके हाथमें एक गठरी होती है, उसे वह वहीं जमीनपर रख देता है। जब गानेका अंतिम चरण खत्म होनेको होता है तब वह ओटलीके पास जाकर "बाई!"* कहकर पुकारता है। पुकारते समय उसका कण्ठ स्नेहावेगके कारण गद्गद हो जाता है।

राजल आवाजको सुनकर मुकलालकी ओर देखती है। तब, जैसे उसको आकस्मिक धक्का लगा हो, इस प्रकार वह अपनी आंखें और मुँह कुछ क्षण [illegible] ज्योंकी त्यों बैठी रहती है। उसके बाद—

"[illegible] मेरे वीर!" (१)

[illegible] है और [illegible] भाईकी ओर लपककर आती है। भाई [illegible] है। [illegible] वह गले लगाती है और [illegible]

सुख: हाँ, काकाजी गंगाजी गया था नो थारा वास्ते यो लुगड़ो, काँचली ने घाघरो भेज्यो हे। यो परसाद ने अँगारो वी मोकल्यो हे। (१)

राजल: तो ई रेशमका कपड़ा मेज्या ? म्हारा सारू ? (२)

सुख: हाँ, तो ?

राजल: नी नी, म्हारा वास्ते नी हे ई। तू तो यूँई चवलाय हे। (३)

सुख: चवलाऊँ काँई लेवा ? मेनें म्हारा हातसे ई कपड़ा थारावास्ते कराया हे। (४)

राजल: साँची ? (५)

सुख: थारे काँई लाग्यो के काकाजी ने जी, ने म्हें सब थारी याद भूल गया नी ? (६)

राजल: (कुछ लज्जित होनेका नाट्य करती है और कपड़ोंको एक एक उठाकर, उनको देखती है। उन्हें देख-देखकर प्रसन्न होती है।)—

ओ म्हारा बा। या मूँदी ओर छल्ला भी मेज्या ? यो फूँदो वी देख रेसम को हे। (उसे गौरसे देखती है) ओर यो चूड़ो! देख ए, पर ई काँच हीरा जेगा केरा चलके ? आज तो ई सब देखीने न्याल हो गई रे भाई! (७)

---

(१) हाँ, काकाजी गंगाजी गये थे, तो तुम्हारे लिये उन्होंने यह लुगड़ा, यह चाँचली और लहँगा भेजा है। यह परसाद और अंगारा भी भेजा है।

(२) तो, ये रेशमके कपड़े भेजे ? मेरे लिये ?

(३) नहीं, नहीं, मेरे लिये नहीं हैं ये। तू तो यूँ ही बात बनाता है।

(४) मैं क्यों बात बनाने लगा ? मैंने अपने हाथसे ये कपड़े तुम्हारे लिये बनवाये हैं।

(५) सच!

(६) तुम्हें क्या लगा कि काकाजी, जीजी (माँ) और हम सब तुम्हें भूल गये, हैं न ?

(७) अरे बाप रे। यह मूँदी और छल्ले भी भेजे ? देख तो, यह फूँदा भी रेशमका है। और ये चूड़ियाँ। देख, इनपर ये काँच हीरे जैसे कैसे चमकते हैं! आज ये सब देखकर मैं निहाल हो गई रे भाई।

सुखः अबतो नी केगी नी के काकाजी थारी याद भूल गया? (१)

राजलः हट् भूटलो कँई को ! मेने या कद की ? (२)

सुखः यो तो रेवा दे, पण वी ला। वी आंबा ने बोर ने काचरा। कॉ रख्या हे वी ! ला दे तो ! (३)

राजलः अरे खोल्डा ! थारी नानपणकी टेंव अबी तलक नी गई नी चिगन्या चावा की ? हे नी ? (उठ कर अपने भाईकी बलायें लेती है।) (४)

सुखः ले ला ! हूँ यूँ नी मानूंगा। (५)

राजलः तो काँई लेगा। ऊ रावड़ो रख्यो हे रांध्योतको। (६)

सुखः रावड़ो तो खाणो हे च। पण म्हारा नाम से राख्यातका आंबा काँ हे ? वी ला पेलां ? (७)

राजलः केने क्यो के थारा वास्ते आंबा राख्या हे मेने ? (८)

सुखः अब भूठलो कूण तू के हूँ ? अबी घट्टी पे गाई गाई ने कूण केतो थो के म्हारा बीराराज के सारू मेने केसी केसी चीजाँ धरी हे ने काँई क्यो हे, ने ऊ आयगा तो ओके म्हारो दुखड़ो गाईने सुणाऊँगा। ला अब हूँ अई गयो। पेलाँ तो दे म्हारी चीजाँ ओर फेर बता म्हारे के थारे काँई तकलीप दी भेरूलालजी ने, तो उणके सम्हालूँ जाई ने। अब कसी ? नी बोले नी ? (९)

---

(१) अब तो नहीं कहोगी न कि काकाजी तुम्हें भूल गये ?

(२) हट्, भूठा कहीं का ! मैंने यह कब कहा ?

(३) अच्छा, यह तो रहने दो। पर वे लाओ, वे आम और बोर, और काचरे (फल विशेष) ! कहाँ रखे हैं वे ? लाओ दो तो।

(४) अरे बदमाश ! तेरी लड़कपनकी आदत अभी तक नहीं गई न मुझे सताने की ? है न !

(५) लो लाओ ! मैं ऐसे नहीं मानूंगा।

(६) तो क्या लेगा। वह रावड़ी (मक्का के आटेसे तैयार किया हुआ पेय) रखी है बनाई हुई।

(७) राबड़ी तो खाना है ही। लेकिन मेरे नामसे रखे हुए आम कहाँ हैं ? वे लाओ पहले।

(८) किसने कहा कि तेरे वास्ते आम रखे हैं मैंने।

(९) अब भूठा कौन, तुम कि मैं ? अभी चक्की पर गा गा कर कौन

राजलः तो हूँ काँई थारा वास्ते के री थी ? (१)

सुखः जद कुण है ई तमारा बीरराज ? म्हारा के बी तो मालूम होवा दो । अब्बी कुण अलछातो थो या केई केई ने । (२)

राजलः तू छानो मानो रेगोके नी ? और काँई के पाडूँगा हूँ तो फेर केगो के आताँ देर नी होई ने राड़ करे । चल ! (अंदर जाकर लोटेमें पानी भर कर लाती है ।) ले हाथ-पाँव धो । (जाकर खाट उठा लाती है और उस पर सतरंजी और गादी बिछाती है ।) ले काँई राबड़ो रांध्योतको है ऊ खायेगो के अबी ठरतो होय तो रोटला बणाऊँ ? (३)

सुखः भैरूलालजी काँ गया ? (४)

राजलः ढांडा छोड़वा गया है गोयरे । (५)

सुखः और बा ?

राजलः वी गया है खेत होर पे रखवाली करवा । (६)

सुखः अबी तलक नी आया ? (७)

कह रहा था कि मेरे बीरराजके लिये मैंने कैसी-कैसी चीजें रखी हैं और क्या-क्या किया है, और वह आवेगा तो उसको अपना दुखड़ा गा कर सुनाऊँगी । देखो, अब मैं आ गया । पहिले तो दो हमारी चीजें, और फिर मुझे बताओ कि भैरूलालजीने तुम्हें क्या तकलीफ दी तो उन्हें जा कर सम्हा-लता हूँ ।

(१) तो मैं क्या तेरे लिये कह रही थी ?

(२) जब कौन हैं ये आपके बीरराज ? हमें भी तो मालूम होने दो । अभी कौन छिपा छिपा कर यह कह रहा था ?

(३) तू खामोश रहेगा कि नहीं ? और कुछ कह दूंगी तो फिर कहेगा कि आते देर नहीं हुई और झगड़ा करने लगी । चल ! ले, हाथ-पांव धो । ले, क्या यह बनाई हुई राबड़ी खायेगा कि अभी ठहरना हो तो रोटी बनाऊँ ?

(४) भैरूलालजी कहाँ गये ?

(५) ढोर छोड़ने गये हैं गोयरे (गाँवके किनारेकी भूमि) ।

(६) वे गये हैं खेत पर रखवाली करने ।

(७) अभी तक नहीं आये ?

राजलः हाँ, रोज तो आ जाय हे। (१)

(राजल अंदरसे सुखलालके लिये कुछ चने और गुड़ लाकर रखती है। राजल नये लाये हुए कपड़ोंको अंदर ले जाकर उन्हें पहनती है। इस बीच समुंदरसिंग, जागीरदारका एक आदमी, आता है। वह रजपूती ढंगका साफ़ा और धोती पहने हुए है। उसकी मूँछें दोनों तरफ़से बिच्छूकी नांगीकी तरह बट देकर उठी हुई हैं।)

समुंदरः ए भैन्या! भैन्या!!

सुखलाल : (खाट पर बैठे-बैठे) वे नहीं हैं। क्यों ?

समु : रावलामें बुलायो हे। (२)

सुखः क्यों ? (इतनेमें राजल दरवाजेमें से झाँककर देखती है।)

समुंदरः क्यों काँई ? वेगार पे भेजना हे ओके। (३)

सुख : वेगार ? हँः हँः हँः हँः, एक दन आप नी कर लो वेगार? आज उनके काम हे। वी नी आयगा। (४)

समु : तुम कूण हो ? (५)

सुख : मैं ? हँः हँः हँः हँः, में आदमी हूँ और कूण हूँ। (६)

समु : काँ रेते हो ? (७)

सुख : इसकी क्या जरूरत हे आपको ? (८)

समु : नी आपका रोब-दाब देखन्या हूँ में तबसे। में तो याँ नीचे खड़यो हूं ओर आप आरामसे खाटपर बेठ्या हो वलाई हो के, ऍं ? (९)

---

(१) हाँ, रोज तो आ जाते हैं।

(२) रावलेमें बुलाया है।

(३) क्यों क्या ? वेगार पर भेजना है उसे।

(४) वेगार ? हँः हँः हँः हँः, एक दिन आप नहीं कर लेते वेगार। आज उनको काम है। वे नहीं आवेंगे।

(५) आप कौन हैं ?

(६) मैं ? हँः हँः हँः हँः, मैं आदमी हूँ और कौन हूँ ?

(७) कहाँ रहते हो ?

(८) इसकी क्या जरूरत है आपको ?

(९) नहीं आपका रोबदाब देख रहा हूँ मैं तबसे। मैं तो यहाँ नीचे खड़ा हूं और आप आरामसे खाटपर बैठे हो बलाई होकर, ऍं ?

सुख : बलाई आदमी थोड़ी होता है ? आदमी तो आप हैं ? आप ही खाटपर बैठना जानते हैं। बिचारा बलाई क्या जाने ? वह तो जानवर होता है जानवर। बस उससे तो चाहे जितना काम लेना, उसको लात जमाना यही आप जैसे ठाकुर लोगोंका काम है, नहीं ?

राजल : (अन्दरहीसे) ए बीरा, तू काँई लेवा बोले हे। उणाँसे के दे के आ जायगी वी।(१)

सुख : काँई लेवा आयगा ? बेगारका वास्ते ? मैं उनके नेठू नी जावा दूँगा।(२)

समुंदर : अबी तम छोकरा हो। दूधका दाँत बी नी पड्या हे। पीठ पे दो चार हंटर पड्या के होश ठिकाणा पे आ जायगा।(३)

सुख : (जरा गुस्सेमें आकर काँपते हुए स्वरमें) आप याँ से सीधी तरा चल्या जाव। बस।(४)

राजल : (बाहर आकर) यो कें करे हे ? (समुंदरसिंगसे) ए हुजूर आप तो जाओ। एकेकें मूँ लागो। यो तो म्हारे याँ पामणो आयो हे। मैं उणके भेज दूँगा।(५)

समुंदर : ओर थारे बी घट्टी पीसवा आणो पड़ेगा।(६)

---

(१) ए वीर, तू क्यों बोल रहा है। उनसे कह दे कि वे आ जायेंगे।

(२) किसलिये आवेंगे ? बेगारके लिए। मैं उन्हें क़तई जाने नहीं दूँगा।

(३) अभी तुम छोकरे हो। दूधके दांत भी नहीं पड़े हैं। पीठपर दो चार हण्टर पड़े कि होश ठिकाने पर आ जा जायेंगे।

(४) आप यहांसे सीधी तरह से चले जाइये। बस।

(५) यह क्या कर रहा है ? ए हुजूर, आप तो जाओ। इसके क्या मुँह लगते हो ? यह तो हमारे यहाँ मेहमान आया हुआ है। मैं उन्हें भेज दूँगी।

(६) और तुझे भी घट्टी पीसने जाना पड़ेगा।

सुख : अरे जाओ ठाकुर साव आप ! अपनी ठकुराणसे घट्टी पिसाओ, जाव ! दूसराकी ओरतहोने पे जबर्दस्ती करवा में सार नी हे । समझया, जाव आप, बस । (१)

समुंदर : बोत मूँजोरी करे हे यो छोरो तो । (२)

राजल : ए हजूर आप क्यों ओ का मूँ लगो हो ? (३)

समुं : अच्छो, हूँ जाऊँ हूँ । पण देखजे एक घड़ीमें तू और थारो आदमी काम पे नी आया हे, तो देखजे चमड़ी उधड़ जायगी । (जाता है ।) (४)

सुख : चमड़ी उधड़ जायगी । हुँः ? ई ठाकुरहोन खुदके कें समझे के आपण शेर हाँ ओर परजा सब बकरी हे । एँ ? अच्छा ! (५)

राजल : तू काँई लेवा उणसे बोल्यो ? थारे काँई करणो हे ? याँ काँई माराजशाई असीच हे ? याँ तो जागीरदार रे हे । ओ की बर्दास्त याँ का हर एक आदमीके हर घड़ी राखणी पड़े । नी तो ऊ असा असा जुलम करे हे के सुणवाआलाका रूंगटा खड़या हो जाय ।......याँको रेणो सेज नी हे । एक बार नरकबास हाऊ, पण या जागीरदारी तो आदमीके नेट्र जानवर करी नाखे । (६)

---

(१) जाइये, ठाकुर साहब, आप ! अपनी ठकुराइनसे घट्टी पिसाइये । समझे । दूसरोंकी औरतोंपर जबरदस्ती करनेमें सार नहीं है । जाइये आप, बस ।

(२) बड़ा मुँहजोर है यह लड़का ।

(३) ए हुजूर, आप क्यों उसके मुँह लगते हो ।

(४) अच्छा, मैं जाता हूँ । पर देखना एक घड़ीके अन्दर तू और तेरा आदमी कामपर नहीं आया है तो चमड़ी उधड़ जायगी, हाँ ।

(५) चमड़ी उधड़ जायगी, हुँः ? ये ठाकुर लोग अपने आपको क्या समझते हैं कि अपन तो शेर हैं और प्रजा सब बकरी है । एँ ? अच्छा ।

(६) तू क्यों उनसे बोला ? तुझे क्या करना है ? यहाँ क्या महाराजशाही है ? यहाँ तो जागीरदार रहता है । उसकी बर्दाश्त यहाँके हरएक आदमीको हर घड़ी रखनी पड़ती है । नहीं तो वह ऐसे जुल्म ढाता है कि

सुख : तो ई अश्या आदमीहोर यॉं केसा रेता होयगा ? ओको कॉंई इन्लाज नी करे ? (१)

राजल : तो कॉंई करेगा वापड़ा ? पाणीमें रेके मगरसे बेर असीच हो सके है। ओर आपण ठेऱ्या बलाई ? सदामतसे ठाकुरहोनकी चाकरी करणो योई आपणो धरम हे। (२)

सुख : (गुस्सेमें आकर और खाटपरसे उठकर) यो कॉंई धरम हे के अधरम ? आदमीसे चाय जो काम लेणो, ओसे वेठ-वेगार लेणी, उणपे जबर्दस्ती चाय जो कर लगाणो; यो कायको धरम हे? (३)

राजल : अरे वी आदमी होरके तो सताय हे पण बाई होरके त्री बापड़ी होर के हर तरे से तकलीप दे। तू तो एक वॉंई देख लेगो तो वेंड़ो हो जायगो। तेने सुणी नी अच्छी उणा ठाकुरने कॉंई की। उणके तो बेगार करवा बुलायो हे, नो म्हारे वी बुलायो हे चट्टी पीसवा। (४)

सुख : चट्टी पीसवा ? ओर तू जायगी ? (५)

सुननेवालेके बाल खड़े हो जाते हैं। यहॉंका रहना आसान नहीं है। एक ... नरवकार अच्छा, पर यह जागीरदारी तो आदमीको एकदम जानवर ... ना लालती है।

(१) तो ये आदमी यहॉं कैसे रहते होंगे ? उसका कुछ इलाज नहीं करते ?

(२) तो क्या करेंगे बेचारे ? पानीमें रहकर मगरसे बैर करना ! और अपन तो ठहरे बलाई। सदासे ठाकुर लोगोंकी चाकरी करना यही अपना धरम है।

(३) यह क्या धरम है कि अधरम ? आदमीसे चाहे जैसा काम ...ना, उससे बेठ-बेगार करवाना, उनपर जबर्दस्ती चाहे जो कर लगाना; ... काहेका धरम ?

(४) अरे, ये आदमियोंको तो सताते ही हैं। पर बेचारी औरतोंको ... हर तरहसे तकलीफ देते हैं। तू तो एक बार देख लेगा तो पागल हो जायगा। तैने सुना नहीं अभी इस ठाकुरने क्या करा। उनको तो बेगार ...के बुलाया है और मुझको भी बुलाया है चट्टी पीसने।

(५) चट्टी पीसने ? और तू जायेगी ?

राजल : जाणो ई पड़े। नी तो यौँ भलाँ रेवा देगा रावळाआळा (जागीरदारका महल)। जरा चीं-चपड़ की यौँ के वी जमदूत होर काँई करेगा एको काँई परमाण नी। अबी या देखो तो खेर हुई के तू बोल्यो, तोवी ऊ जवान लकड़ी लेके नी मंड्यो। नी तो जरा उलटा-सुलटा बोल्या तो यौँई धमाधम मारवा लग जाय हे ई लोग। एसा कसाई हे। (१)

सुख : यो एसो काँई होय हे ? (२)

राजल : या काँई एक दनकी बात हे ? सदामतसे एसो ई चल्यो आयो हे चल्ड़ो। लोग होर मार्‍या जाय हे, पिटया जाय हे। पण कोई हूँ के चूँ नी करे हे। पेलाँ में जदे यौँ आई तो म्हारे वी असो अटपटो लागवा लाग्यो यौँकी रीत देख के। जाणे वेठ-वेगार आपणे यौँ वी करे हे। पण वाँ वेराँ मनख के तो नी सताय। पण यां तो वाई होरके मनखके घाँई पकड़ पकड़के ले जाय ओर उणासे वी दन दन भर काम ले ओर राम जाणे काँई काँई करावे ? (३)

सुख : वाई, तू मत रे यौँ। (४)

---

(१) जाना ही पड़ेगा। नहीं तो यहाँ रहने देंगे ये रावळे वाले ? जरा चीं-चपड़ की कि यहाँके ये यमदूत क्या करेंगे, इसका कोई प्रमाण नहीं। अभी देखो, यह खैर हुई कि तू बोला तो भी वह जवान लकड़ी लेकर नहीं दौड़ा। नहीं तो जरा उलटा-सुलटा बोले कि वहीं धमाधम मारने लगते हैं ये लोग। ऐसे कसाई हैं।

(२) यह ऐसा क्यों होता है ?

(३) यह क्या एक दिनकी बात है ? सदासे ऐसा ही चर्खा चला आया है। लोग मारे जाते हैं, पीटे जाते हैं, पर कोई हूँ कि चूँ तक नहीं करता। पहले मैं जब यहाँ आई तो मुझे भी बड़ा अटपटा लगने लगा यहाँकी रीति देखकर। यानी, वेठे-वेगार अपने यहाँ भी होती है; पर वहाँ औरतोंको तो नहीं सताते। लेकिन यहाँ तो औरतोंको आदमियोंकी तरह पकड़-पकड़ कर ले जाते हैं, और उनसे भी दिन-दिन भर काम कराते हैं और राम जाने क्या-क्या कराते हैं।

(४) वाई, तुम मत रहो यहाँ।

राजल : फेर काँ जावाँ वीर ? याँ आपणो घर-बार, खेती-बाड़ी सबी हे। अांके छोड़के दूसरी जगे काँ जाणो ? (१)

सुरू : तू तो चाल घरे। (२)

राजल : पण वाँ जावासे याँ की रीत में केसो फ़रक होयगा ? थारे दो दनकी वासो। फेर तो याँई आई ने वळणो हे नी (३)

सुरू : हूँ ! नेमल्लालजी नी आया अबी तलक ? (४)

राजल : वी नी, आता होयगा ! नी तो बीचमें मिल गया तो पकड़ के ले जाय तो काँई खबर नी पड़े। (५)

सुरू : मैं अबी देख आऊँ। (६)

राजल : नी, नी वीरा। तू आ गयो। इत्तोच घणो। अब एकलो याँ नी पड़ेगो। (७)

सुरू : क्यूं ? तो काँई रात दन ढोर घाँई याँई खूँटा पे बँध्यो रूंवा के ? (८

राजल : नी नी, थारे मालम नी। याँ का आदमी होर ई आपणा ठिकाणेदार और नानेदार सब घणा खारखाऊ हे। तू भण्योतको हे, तो या देखके जळी जाती वळे। (९)

---

(१) फिर कहाँ जायें, वीर ? यहाँ अपना घर-बार, खेती-बाड़ी, सभी तो है। उसको छोड़कर दूसरी जगह कहाँ जायें ?

(२) तुम तो चलो घर।

(३) पर वहाँ जानेसे यहाँकी रीतमें कैसे फ़रक होगा। तेरे यहाँ दो दिनका वासा। फिर तो यहीं आकर मरना होगा न।

(४) हूँ ! नेमल्लालजी नहीं आये अभी तक ?

(५) वे न ! आते होंगे। नहीं तो बीचमें मिल गये और पकड़कर ले गये तो कुछ खबर नहीं।

(६) मैं अभी देख आता हूँ।

(७) नहीं, नहीं, वीर ! तू आ गया इतना ही बहुत। अब अकेले तो [illegible] नहीं पड़ना।

(८) क्यों ? रात-दिन ढोरकी तरह यहीं खूँटे पर बँधा रहूँगा क्या ?

(९) नहीं, नहीं, तुझे मालूम नहीं। यहाँके आदमी—ये अपने

सुख: क्यूँ ? मेने उणको काँई बगाड्यो ?(१)

राजल: या ले ! तो तू या बताके म्हाँने अणी ठाकर होरको काँई बग ड्यो ? पण वी क्यूँ भलाँ म्हाँके तकलीप दे हे ? वाई बात हे । वी आया। (

सुख: कूण ? भेरूलालजी ? (३)

(राजल छेडा (घूँघट) निकालकर अंदर जाती है। सुखलाल औ भेरूलाल गले मिलते हैं।)

भेरू: कदे आया ? कदे आया ? (४)

सुख: यो आई ने बेठयोच तो हूँ। (५)

भेरू: घर पे बासाप तो मजेमें नी । (६)

सुख: सब मजामें। काकाजी गंगाजी गया था सो अबी आया। (७

भेरू: हाँ चलो हाऊ। आपकी पढ़ाई चली री हे नी ? (८)

सुख: हाँ, हाँ !

(इतनेमें राजल कंडेपर आग लाकर रखती है।)

भेरू: ई कदे आया ? भाभी ? ई तो बोत बड़ा हो गया, एं ? काँइ ब हे ? वा हाऊ। (९)

भाई-बंद और नातेदार—सब बड़े दुष्ट और खार खानेवाले हैं। तू लिखा- है तो यह देखकर उनकी छाती जलती है।

(१) क्यों ? मैंने उनका क्या बिगाड़ा ?

(२) यह लो ! तो तू यह बता कि हमने इन ठाकुरोंका क्या बिगाड़ा पर वे क्यों हमको तकलीफ़ देते हैं ? वही बात है। वे आ गये ।

(३) कौन ? भेरूलालजी !

(४) कब आये ? कब आये ?

(५) यहाँ आकर बैठा ही तो हूँ।

(६) घरपर बा साहब तो मजेमें हैं न ?

(७) सब मजेमें हैं। काकाजी गंगाजी गये थे, सो अभी आये हैं

(८) हाँ ! चलो अच्छा। आपकी पढ़ाई चल रही है न ?

(९) ये कब आई ? भाभी ? अरे ? ये तो बहुत बड़ी हो गई, एं ? क्या बात है ? चलो अच्छा।

सुख: कठै आया ? (१)

मेरू: उणाके पेलाँ देखणो पड़ेगा । (२)

सुख: बेमार हे काँई ? (३)

मेरू: बेमार तो नी हे । पण वी काँ जख ले हे । काँई नी काँई उचा करताई फरे हे । वोई परसूँ देखो तो, वी मोत्या से ई लड़ पड्या । (४)

सुख: क्यूँ ? (५)

मेरू: अब काँई वतावाँ ? वा के हे नी के घरको भेदी लंका लुटावे उ वाळो किस्सो हे । यो मोत्यो, आपणो जात भाई । पण ऊ लाग्यो समुंदरसिंग के मूँ । तो समुंदरसिंग ओ के उल्टी-सुल्टी पट्टी पढ़ाइने म्हाँ परेश्यान करे हे । (६)

सुख : ओको केणो काँई हे ? (७)

गया तो भी कुछ बात नहीं । लेकिन औरतें तो रावलेमें अकेली नहीं भेजी ज सकती हैं न । समझे कि नहीं ? और आज तो वह गई और तुम दोनों मेह मान आये, तो कोई न कोई चाहिये कि नहीं तुम्हारे पास । वा (वड़ा बुजुर्ग) भी नहीं आये न अभी तक।

(१) कहाँ आये ?

(२) पहले उनको जाकर देखना होगा ।

(३) क्या बीमार हैं वे ?

(४) बीमार तो नहीं हैं । पर वे भी कहाँ जख लेते (खामोश बैठते हैं ? कुछ न कुछ उठापटक करते ही रहते हैं । वही परसों देखो तो वे मोत्या लड़ पड़े !

(५) क्यों ?

(६) अब क्या बतायें ? वह कहते हैं न कि घरका भेदी लंका ढावे वह मोत्या, अपना जात भाई । पर वह लगा है समुंदरसिंगके मुँह, तो समुंद सिंग उसको उल्टी सुल्टी पट्टी पढ़ाकर हमें परेशान करता है ।

(७) उसका कहना क्या है ?

भेरू: ओ हो ! या काँई ? अबी वा पोंची नी काँई ? अब तो म्हारे देखणोच पड़ेगा । (१)

(उठकर जानेको होता है । मुखलाल उसका हाथ पकड़ता है और बैठाता है ।)

सुख: म्हारा बाईकी तम मती परवा करो । ओके तो कोई काँई नी कर सके हे । (२)

भेरू: अरे नी भैया । याँ जागीरदारी खाको हे । बेराँ मनखको याँ काँई भरोसो नी । याँ का ठाकुरहोरकी नीयत कद बगड़ेगी एको परमाण नी । आपणे बचावसे रेणो याई साँची बात हे । (३)

सुख: यो तो बड़ी मुश्किलको पेंच हे । कदी उणकी नीयत बगड़ गई तो तम काँई करोगा ? (४)

भेरू: काँई करांगा ? जो भागमें बदो होयगा सो होयगा । विधनाके आगे आदमी कैं करेगो ? लो हूं जाऊँ हूँ । (५)

---

(१) ओ हो ! यह क्या ! अभी वह पहुँची नहीं क्या ? अब तो मुझे देखना ही होगा ।

(२) मेरी बाई की तो तुम परवाह ही न करो । उसका तो कोई कुछ कर नहीं सकता है ।

(३) अरे भैया, नहीं । यहाँ जागीरदारी खाका है । औरतोंका यहाँ कोई भरोसा नहीं । यहाँके ठाकुरोंकी नियत कब बिगड़ेगी इसका कोई प्रमाण नहीं ! अपने बचावसे रहना यही अच्छी बात है ।

(४) यह तो बड़ी मुश्किल का पेंच है । कभी उनकी नीयत बिगड़ गई तो तुम क्या करोगे ?

(५) क्या करेंगे ? जो भाग में लिखा होगा वह होगा । विधनाके आगे आदमी क्या करेगा ? अच्छा, देखो मैं जाता हूँ ।

आपका जिक्र करते हैं हूरो-मलाह
आपका जिक्र करते हैं सातुरफला
ख्वाजा नूरोंमें नूर अल्लाह सल्यल्लाह
अपने आपको बनाये हयातो-नबी
तू गरीबों का गुरूर अल्ला सल्यल्लाह

(जब तक गाना चलता रहता है तब तक राजल अचल बैठी रहती है। फ़क़ीर गानेके अंतमें कहता है)

या मावूत परवरदिगार ! सबको आबाद रखे ! गल्ले-पल्लेमें बरक़त दे ! आंखोंमें रोशनी दे ! तेरा साया सबको खुश बनाया रखे ! जल्ले-जललालहू ! (यह कहने पर वह जाने को होता है। लेकिन वह थोड़ा ठिठक कर राजलसे पूछता है)

फ़क़ीरः बेटी आज तू यों सुस्त क्यों है ? हर सुबह तेरे यहां मैं आता हूँ। तू मुझको बराबर खुश होकर आटा देती है। आज तुझे क्या हो गया?

राजलः बाबा, याँ काँई एक दुख हे जो बताऊँ। हर घड़ी याँ तो मार-पीट चलीच जाय हे। (१)

फ़क़ीरः अल्लाह सबका परवरदिगार है, बेटा ! वह सबका भला करेगा।

राजलः जद भलो होयगा जद देखांगा। याँ तो रोज पिटाई उड़ री हे। (२)

(उठकर उसके लिये आटा लाने जाती है।)

फ़क़ीरः उसे रोक कर बेटी रहने दो। तुम हमारी कोई फ़िक्र मत करो। जिस अल्लाहकी हमने तुमको दुहाई दी है, वही हमें भी देखता है।

(इतनेमें भेरूलाल और सुखलाल कराहते हुए वा को वहां लाते

(१) बाबा, यहां क्या एक दुख है जो बताऊँ। हर घड़ी यहां तो मार पीट होती ही रहती है।

(२) जब भला होगा तब देखेंगे। यहां तो रोज पिटाई उड़ रही है।

भेरू: अरे हुजूर, यो काँई करो हो ? (१)

समुंदर: कांई कर्‌यो हूँ। तम हो जातका ढेड़। तमारी जद तलक जूतासे पूजा नी की जाय, तब तलक तम ठिकाणा पे नी आओ। तीन बार तमारे बुलावा आवाँ तो भी तमारी आँख नी खुले नी ? एसा हो गया आप लाट साब ? ले चाले हे के नी, के फेरसे जमाऊँ ? (२)

फ़कीर: अजी ठाकुर साहब, जरा इंसानियतसे काम लीजिये। यह उसका बाप है। उसको बेचारेको किसीने ऐसा मारा है कि अभी तक उसके होश गुम हैं। उसे छोड़ कर यह उसका लड़का कैसे जायगा ?

समुंदर: अब अणांकी पेरवी आप करवा मँडया हो काँई ? मुख्त्यारनामा तो नी लियो नी एको ? बाबा तम तो फ़कीरी करो। ई बातां तमारा समझ नी आयगी। (३)

फ़कीर: क्या नहीं समझमें आयेगी ? इस बूढ़ेकी हिफ़ाजत करनेवाला उसके सिवा कौन है ?

समुंदर: यो बुड्‌डो नी ? आप कांई अणके गरीब समझ बेठ्या हो अव्वल नंबरको गुंडो रख्यो हे गुंडो ! अणके तो जद सुबे शाम असीच खुराक मिले, जदी ई सूदा होयगा। (४)

---

(१) अरे हुजूर, यह क्या कर रहे हो ?

(२) क्या कर रहा हूँ। तुम हो जातके ढेड़। तुम्हारी जब तक जूतेसे पूजा नहीं की जाय, तब तक तुम ठिकाने पर नहीं आओगे। तीन बार तुम्हें बुलाने आवें, तो भी तुम्हारी आंख नहीं खुलती है न ? ऐसे हो गये आप लाट साहब ? चलता है कि नहीं कि फिर से जमाऊँ ?

(३) अब इनकी पैरवी आप करने चले हैं क्या ? मुख्त्यारनामा तो नहीं लिया न इसका ? बाबा तुम तो फ़कीरी करो। ये बातें तुम्हारी समझमें नहीं आयेंगी।

(४) यह बुड्ढा न ? आप क्या इसको गरीब समझ बैठे हो ? अव्वल नंबरका गुंडा रखा है गुंडा। इनको तो जब सुबह शाम ऐसी ही खुराक मिले, तभी यह सीधे होंगे।

समुन्दरः भेन्या देखजे हो ! आज जो तू नी आयो हे तो थारी इतरी पिटाई उड़ाऊँगा के थारा सब होश गुम हो जायगा। (१)

भेरूः तो हुजूर, मैं काँ नकारो करूँ हूँ। मेने तो क्यो नी के वाको अबी इंतजाम करीने आप नी पोंचो इत्तामें अंटामें दिखूँगा। (२)

समुन्दरः म्हारा साँते चलेगो के नी, साफ़ साफ़ बता। (३)

फ़क़ीरः कह तो रहा है, भाई कि वह आयेगा। और क्या चाहिये? तुम तो एकदम बच्चे की तरह क्या सिर होते हो?

समुन्दरः ए बावा, तू तूकारासे मत बोलना। तू क्या समझता है मेरे कूँ? (४)

फ़क़ीरः अरे अल्लाह के बन्दे, जा ! इस तरह गुस्सेमें आकर उस परवरदिगार का गुनहगार मत बन। अल्लाह एक है। हम सब उसीके बन्दे हैं। अल्लाहके बन्दोंको आपसमें लड़ना मुनासिब नहीं।

समुन्दरः अच्छा, आज तम लोग बगावत उठावा पे मँडया हो दिखे। अच्छो देख लूँगा। तैयार रेना भेरू। मैं अबी आया। (५)

(समुन्दरसिंग गुस्सेमें जाता है।)

फ़क़ीरः यह इंसान है कि हैवान?

भेरूः अब तमी देख लो, बावा। हमारी जिन्दगीको योई नक्शो हे। अब फेर पाछो ऊ आयगो। दो जणाँ के लायगो और जबर्दस्ती मारपीट के म्हारी बरात सारा गाममें निकालेगो। असा कसाई हे याँ कौंई ठाकुरलोग। (६)

---

(१) भेन्या, देखना हो। आज जो तू नहीं आया है तो तेरी इतनी पिटाई उड़ाऊँगा कि तेरे सब होश गुम हो जायँगे !

(२) तो हुजूर, मैं कहाँ इंकार कर रहा हूँ? मैंने तो कहा न कि वाका अभी इन्तज़ाम करके आप नहीं पहुँचोगे उसके पहले मैं रावलेमें दिखूँगा।

(३) मेरे साथ चलेगा कि नहीं। साफ़ साफ़ बता।

(४) ए बावा, तू तुकारेसे मत बोल। तू क्या समझता है मुझे?

(५) अच्छा, आज तुम सब लोग बगावत करने पर उतारू हो, एं? अच्छा, देख लूँगा। तैयार रहना, भेरू ! मैं अभी आया।

(६) अब तुम्हीं देखो, बावा ! हमारी जिन्दगीका तो यही नक्शा है।

सेठः म्हारे तो काँई बी नी सूझे। ई बा पड़्या हे। अणाँको काँई होगा?(१)

फकीरः बेटा, अल्लाह सबका मालिक है। तुम वाकई इस वक्त बहुत मुसीबतमें हो।

(इतनेमें समुन्दरसिंह दो आदमियोंको लेकर फिरसे आता है और सेठ और राजलको धक्का देकर ले जाता है। राजलको ले जाते वक्त सुखलाल प्रतिरोध करता है: लेकिन उसको भी दो चार घूँसे जमाकर अलग कर दिया जाता है। उसके चले जानेके बाद)

फकीर : या अल्लाह तोबाह ! सब अंधेर हो रहा है।

बुड्ढा बा : (होशमें आकर) यो काँई होइर्यो हे ? (२)

सुख : काँई नी यो तो बेणोईजी के ले गया हे। (३)

बा : हाय ! तम सुखलाल हो ? (४)

सुख : हाँ, बा ! तुम्हारे घणी लागी। (५)

बा : अरे हूँ मर जातो तो हाऊ होतो। (६)

फकीर : किसने मारा बाबा तुमको ? (७)

बा : अरे बाबा काँई बताऊँ ? सब या समुंदरसिंगकी करतूत हे। रातने मेरा घरमें डाका डाल दिया तो मेने अड़क्यो। तो ऊ मोर्यो ने दो चार जण म्हारा पे लठ लेईने मंड गया। ओका बाद म्हारे काँई बी होश नी। (८)

---

(१) मुझे तो कुछ भी नहीं सूझता। ये बा पड़े हैं। इनका क्या होगा ?

(२) यह क्या हो रहा है ?

(३) कुछ नहीं, यह तो बहनोईजीको ले गये हैं।

(४) हाय ! तुम सुखलाल हो ?

(५) हाँ बा ! तुम्हें बहुत चोट आई ?

(६) अरे मैं मर जाता तो अच्छा होता।

(७) किसने मारा बाबा, तुमको ?

(८) अरे बाबा, क्या बताऊँ ? सब इस समुन्दरसिंगकी करतूत है। रातमें लोगोंने डाका डाल दिये। तो मैंने रोका तो मारा और दो चार लोग मेरे ऊपर लट्ठ लेकर दौड़े। उसके बाद मुझे कुछ भी होश नहीं।

अंक दूसरा

अंक दूसरा

जागीरदार

अंक दूसरा

(स्थान—जागीरदारकी बैठकका कमरा । स्टेजके ठीक बीचमें एक सोफा रखा है । बांई ओर एक टेबल, जिसपर एक ग्रामोफोन रखा है । दाहिनी ओर तीन पीठदार कुर्सियां रखी हैं । बांई ओर सामने एक उम्दा पॉलिशकी पीठदार कुर्सी और उसके सामने एक छोटा टेबल जिसपर एक गुलदस्ता और एक कलमदान रखा हुआ है ।

जब परदा खुलता है तब महाराज ग्रामोफोनको चाबी देकर उसपर एक रेकार्ड रखता है । रेकार्डका गाना कुछ इस प्रकारका होता है: "दीवाना बनाना हो तो मस्ताना बना देना ।" रेकार्ड रखकर महाराज सामने कुर्सीपर बै,

महाराज : आता ई होयगा। सिकार पे गया हे। थोड़ी घणी देर लगी जाय हे। लो बेठो नी, तुम तो खड़याच हो। (१)

समुन्दर : कोनी! कोनी! (एक कुर्सी खींचकर महाराजके सामने बैठता है। महाराज उसके लिए भी पान लगाता है।) मेंने फोनूकी आवाज सुनी तो क्योके हुजूर होयगा। काँई कामदार साब बी नी पधार्‌या? (२)

महाराज : हैं:, अरे छाया जो हे काँई, वा आपणा देहके छोड़ सके हे? बोलो दो जुवाब? (३)

समुन्दर : नी होकम यो कदी होयो हे? (४)

महाराज : बस! तो कामदार साब हजूरके छोड़ीने भलाँ याँ केसा आवेगा? जाँ सूरज भगवानका दर्शन होया वाँ ओकी छाया धरीच समझो। लो हे, ह, हैं, हे! (५)

(पान तैयार करके दाहिने हाथको बाँया हाथ जोड़कर पेश करता है। इसी तरहसे उसे तंबाकू भी पेश करता है।)

समुंदर : वा, महाराज, वा! तम तो पान काँई लगाओ हो के बस तबियत कलीका माफक खुल जाय हे। (६)

---

(१) आते ही होंगे। शिकार पर गये हैं। थोड़ी बहुत देर लग ही जाती है। आइये, बैठिएगा। आप तो खड़े ही हैं।

(२) नहीं, नहीं! मैंने फोनोकी अवाज़ सुनी तो कहा कि हुजूर होंगे। क्या कामदार साहब भी नहीं पधारे?

(३) हैं:, अरे छाया जो है, क्या वह अपने देहको छोड़ सकती है भला! बोलो दो जवाब!

(४) नहीं होकम, यह भी कभी हुआ है?

(५) बस, तो कामदार साहब हुजूरको छोड़कर यहाँ कैसे आवेंगे? जहाँ सूरज भगवानके दर्शन हुए वहाँ उसकी छाया भी रखी हुई है, समझ लीजिए। हे, हे, हे, हे!

(६) वाह महाराज वाह! आप पान तो क्या लगाते हो कि बस तबियत कलीकी तरह खुल जाती है।

महाराज : तो ? आपने काँई समझ रख्यो है ? या विद्या, काँई, हमारा पुरुखाहोरके एक देवीने बनाई थी। तम या समझो के एक पामपे जद म्हारा पुरुखा इक्कीस बरस रगड्यान्या तब वा देवी प्रसन्न हुई। और फेर काँई नाम मैं वींने वरदान दियो के 'जा बेटा! थारा हाथमें यो पान दूँ हूँ, काँई, तो तू जेके जेके लगाके देगो ऊ थारा वशमें होइ जायगो। यो म्हारा हाथसे पान खावाको गुण धर्म है। सो के है नी के (१)

आया हूँ बड़ी दूरसे, देता हूँ दवाई;—और
पानकी पत्ती तोड़के खोल देता हूँ कलाई ॥

मसुंदर : वा महाराज वा! तम तो घणा करो हो। (२)

महाराज : (हाथ जोड़कर) होकममें हाँ, ठाकुर साब, आपका। अगर कृष्ण भगवान हो तो यो आपको सुदामा ब्राह्मण है। अगर आप को तो मैं एक मिनटमें दिन नूं रात बना डालूँ : (३)

ब्राह्मण हैं हम ज्ञानको माथे विष्णु भगायो
जा दूर समुद्रमें ॥
भामन हैं, भर ज्ञानको माथ पै बैठ्यो हलो
वो पतालकी खोहमें ॥

देर अन्यमनस्क सा बैठा रहता है।) अरे साब, आप नेट ई चुप होई गया। एसी काँई बात है। लाव देखाँ तमारो हाथ बताओ। बोत दन से आप ही के या था के हाथ देखो। आओ अँई आड़ी आओ। लो सरको इंगे। (कुछ देर समुंदरसिंग का हाथ लेकर उसकी परीक्षा करता है।) हुँ, हुँ, हुँ, हुँ, अरे वा, ठाकर साब, केसो अच्छो हाथ है आपको। आपका योग तो बड़ा जबरा है। परंतु आप का मन में इस समे पीड़ा को योग है जरूर। बोलो है नी सच। (१)

[समुंदरसिंग के मुँह की तरफ अर्थपूर्ण दृष्टिसे देखता है।]

समुंदर: अच्छा, महाराज! ये बताओ, हमारी मनोकामना सिद्ध होगी के नी? (२)

महाराज: या तो मेंने पेलाँच की के योग बड़ो जबरो है! बोलो। (३)

समुंदर: आप ने नस के तो पकड़ी है। पर अब या बात बताओ के

ऋणी घातयोग को इलाज कदी होई सके हे के नी ? (४)

महाराज : हैं :, या बी काँई वातमें वात हे। ठाकर साब, दुनियां एजी कोनसी वात हे जो ब्रामणासे नी होई सके हे। अरे— (१)

ब्राह्मण ही के प्रतापसे चारिहुँ वेद बने .
शिव. विष्णु, महा ॥
ब्राह्मण मंत्र प्रभाव से डोलैं धरा, अगनी
जल, वायु महा ॥
ब्राह्मण के वश में यमराज हैं, काल हैं,
भैरव शेष महा ॥
कौन सो दुःख जो ब्राह्मण के परताप से
दूर न होय यहां ॥

समुंदर : वा महाराज, कवित्त तो आप एसो वखत को पढ़ो होके कि ... झड़की उठे हे। (२)

महा : अच्छा, अब या वात तो रेवा दो आप। आप तो म्हारे ... की वात को। बताव काँई बात हे ? (३)

समुंदर : वात वात तो कें नी हे। और वेसे समझो तो हे बी स... और एक तरे से आप ओके पेचाणो बी हो। और आप से काँई छिपी हे ... ने हम आप के कें बताआं ? (४)

---

(४) आपने नस तो पकड़ी है। पर अब यह बताइये कि इस ... योगका इलाज कभी हो सकेगा कि नहीं ?

(१) यह भी कोई बातमें बात है ? ठाकुर साहब, दुनियांमें ... कौन सी बात है जो ब्राह्मणसे नहीं हो सकती ? अरे—

(२) महाराज, कवित्त तो आप ऐसा वक्त का पढ़ते हैं कि ... एकदम फड़क उठता है।

(३) अच्छा, अब ये बातें तो रहने दीजिये आप। आप तो ... मुद्देकी बात कहिये। कहिये असली बात क्या है ?

(४) बात बात कुछ नहीं है। और वैसे समझो तो है भी सही। और एक तरहसे आप उसे पहचानते भी हैं। और आपसे क्या छिपा हुआ है ? और हम आप को क्या बतावें ?

महाराज : अरे जाणाँ तो सब हाँ। क्योंकि ब्राह्मण त्रिकालका ज्ञानी होय है। फेर भी थारे मूँ से तो सुणाँ के काँई बात है? (१)

समुंदर : अरे तो एमें सुणावा की बातच काँई है? अब याई बात ले लो। इणी टेर मैं बैठ्या हुजूरकी दस्तकारी में। काँई? एक बात कूँ हूँ। ने हुजूर को एणो तगादो नी। अब होय के नी दिल में तकलीफ? अब वाई परसोंकी बात ले लो। हुजूर के मुजरो कियो ने हजूर ने देख्यो तगाद नी। काँई। (गर्दन हिलाते हुए) ओका पेलाँ की ले लो। मैंने हुजूर से अरज करी के आजकल का जमाना में थोड़ी जमीन पे गुजर नी होय है। थोड़ी जमीन की ओर दरख्वास्त दी। पण हुजूर ने बात ई सुणी अनसुणी कर दी। अब या बात पेलाँ कदी नी होती थी। अब बोलो? ई बातों देखी सुणी ने दुख होगया के नी? (२)

महाराज : वाजबी है। क्यों नी होगा दुःख। पण आप या मन मसोज बैठो के हमारा दुखके कोई इलाज नी है। (३)

(१) अरे जानते तो हम सब हैं। क्योंकि ब्राह्मण त्रिकाल का ज्ञानी होता है। फिर भी आपके मुँह से तो सुनें कि क्या बात है?

समुंदर : आपकी या वात तो ठीक हे। ओर म्हारे वी थोड़ी घणी ग समे हे, पण कोंई नी कोंई असर पड़याँ विगर दवाइ अच्छी के वुरी यो के समजमें आ सके हे। (१)

महाराज : या लो, आप तो दवाईकी वात करबा लागया। अरे, दवाईश असर तो ओका देवाका वाद दिखे। ओर मंत्रको जो असर हे तो तम र समझलो के ओके पड़याँ पेश्तर से ई लागू होई जाय हे। (२)

समुंदर : हाँ! यो तो फेर घड़ो वेंड़ो काम हे रे भाई। (३)

महाराज : जद ! तम समझ्या कोंई ? अरे ब्राह्मण से तो देवता तगा डरे हे, तो मनखको तो वात ई छोड़ो। अव या देखो के तमने म्हारे से स वात के दी। वस! तमार पे मंत्र लागू हो गयो। वोलो हे नी? (४)

समुंदर : अव म्हारे के कोंई मालम पड़ सके हे? (५)

महाराज : हां, वाजवी हे। अरे मंत्र शक्ति जो हे ओको असर वो [illegible]। पण जितो गुच्छम उतो ई वा गेरो असर करे हे। (६)

समुंदर : देखो: अव तम वी यॉंई हो ओर हूँ वी यॉंच हूँ। अगर थॉंक

आशीर्वादसे काँई फल निकल्यो तो देखाँगाच। (१)

महाराज: फल काँई यूँई आई ने टपक जायगा? अरे ओके तो जब-दस्ती तोड़िके लाणो पड़े है। नी हाथमें आय तो बी मंत्र, तंत्र यज्ञ, याग, जप, तप, योग साधनसे जो है सो लाणो पड़े है। आप यो मत समजना के आपने मूँडो बायोके मिठाईको टुकड़ो ओमें आईने पड़यो।...ओर नी बी या बात बी हो सके है, कदे, जद आप ब्राह्मणके पेलाँ काँई नी काँई दच्छिणा को इन्तजाम करो। काँई? (२)

मँगुदर: हाँ, हाँ।

महाराज: हाँ हाँ नी! म्हारी बातके आप जरा गौरसे समझो। अरे कोरट में आप वकीलके करो मुख्त्यारनामो देईने ओको मेंताणो दियो के वरे आई ने मजेसे पान बीड़ी ने खा जाओ। आपको मुकदमो चलतो रेगा। ओर ओको फैसलो बी होतो रेगा। याई बात याँ बी है। ब्राह्मणके आप खास देवताको वकील समजना। एक बार ओके आपने मुख्त्यारनामो देईने ओकी दक्षिणा दी के फेर आपके देखवा की जरूरत नी री। (३)

(१) देखेंगे, अब आप भी यहीं हैं और मैं भी यहीं हूँ। अगर आपके

समुंदर: वा महाराज अणी वखत काँई लाख रुपयाकी वात आपने सुणाई है (१)

महाराज: जद ? (२)

(इतनेमें कामदार साहब प्रवेश करते हैं। कामदार ४०, ५० साल का छरहरे बदनका, कुछ लम्बा, गोरे रंगका आदमी है। वह एकदम दरबारी पोषाक में आता है। सिर पर पचरंगा रजपूती ढँगका साफा, बँद कालरका रेशमी कोट और चूड़ीदार पजामा। आते ही वह महाराजकी ओर मुखातिब होता है।)

कामदार: काँई होईऱ्यो है, महाराज ? (३)

महाराज: अरे हमारसे आरे काँई बण सके हे। पान खाई ने आपको इँतिजार कऱ्या हाँ (४)

कामदार: आप ओर म्हारो इंतजार करो हो ? (५)

महाराज: नी तो ? आप काँई असा वसा हो? वो के हे नी के (६)

जो सिवदर्शनको सुख चाहो तो साँड़
की पूँछ में हात लगाहुजू ॥
हाकिम को करना खुश चाहो तो जा
चपरासि की दाढ़ि हिलाहु जू ॥
सेठ को माल जो लेन चहो तो
हमालको अव्वल से समझाहु जू ॥
जो तुम स्वामि कृपा को चहो, तिन नोकर
के पद माथ नमाहु जू ॥

---

(१) वाह महाराज! इस वक्त क्या लाख रुपयोंकी वात सुनाई है आपने।

(२) जब ?

(३) क्या हो रहा है, महाराज ?

(४) अरे हमारेसे और क्या बन सकता है ? पान खाकर आपका इँतजार कर रहे हैं।

(५) आप और मेरा इँतजार कर रहे हैं ?

(६) नहीं तो ? आप क्या ऐसे वैसे हैं ? वह कहते हैं न

कामदारः वा महाराज वा ! आज तो आप दोई कराइ* जाग्या हो दिखे! (१)

महाराजः अरे कांई कामदार साब, अबी तो कागाबासीच+ हो ई हे। (२)

समुन्दरः कागाबासीको वखत जद या हालत, तो राजविलासीकी= बखत कांई हालो होयगा ? (३)

कामदारः इणी वखत तो मारा जको हवाई जहाज एसो सन्नाटो मारे हे के कोईंका कान ई नी आय। (४)

महाराजः अरे भला क्यों दुख दो हो गरीब ब्राह्मणके? क्यों बिचारा का कनांमें कुनेन घोलो हो।

हे, हे, हे, हे, ! को साब (५)

(कामदारको पान पेश करता है।)

कामदारः वो ठाकुर साब, कैसे रहे ? (६)

समुंदरः अरे समुंदरके सामने कोई टिक सके हे ? जरा त्योरी फेरीके कि बड़ा बड़ा जहाज गड़बड़ा समझो। तो यो गेह बापड़ो किस गलीमें गलबला? (७)

महाराजः पण छोटी छोटी बातों भी बड़ी बड़ी बड़ी तकलीफ दे हे। छोटो

---

(१) वाह, महाराज वाह ! आज तो आप दोनों कराह जा रहे हैं।

(२) अरे कामदार साहब अभी तो कागा-बासी ही हुई है।

(३) कागाबासीके वक्त जब यह हालत तो राजविलासी के वक्त क्या हाल होगा ?

सो काटो वी तबियत हरी कर दे हे। (१)

समुंदरः हाँ ! महाराज ! बात तो तमने म्हारा मनकी की हे रे भाई।(२)

कामदारः क्यों, क्यों ?

समुन्दरः एसी कोई खास बात तो नी हे । पण आदमीके फूंक-फूंकके पेर रखणो अच्छो बतायो हे । मेन्याके यॉं आज एक पामणो आयो हे। खादीका कपड़ा पेन रख्या हे। कॉंई कॉंग्रेस को आदमी दिखे हे । हे तो छोटो पण मिज़ाज तो ओका वादस्याके वी मात करे हे। (३)

महाराजः ऊ कॉंग्रेस को होय चाय रॅंगरेजको होय । हुजूर का राजकी चोखटमें पाम धऱ्यो तो केसो वी शेर एकदम बकरी वण्यो ई समझो। (४)

कामदारः कॉंग्रेसका आदमी और मेन्याके यहाँ कैसे आया ? इसकी तलाशी जरूर कराना चाहिये ।

समुन्दरः आपका होकमकी देर हे। ऊ यॉं आयोच समझो। (५)

कामदारः हॉं, हॉं !

समुन्दरः अच्छो ! में अवी आयो ! (६)

(जाता है ।)

महाराजः समुन्दरसिंग वी क्या आदमी है ? काम बतायो नी के होयो ई

---

(१) पर छोटी छोटी बातें भी कभी कभी बहुत तकलीफ़ देती हैं। छोटा-सा काटा भी तबियतको हरी कर देता है।

(२) हॉं महाराज ! बात तो आपने मेरे मनकी कही है रे, भाई !

(३) ऐसी कोई खास बात तो नहीं है। पर आदमीको फूंक-फूंककर पैर रखना अच्छा बताया है । मेन्याके यहाँ आज एक मिहमान आया है। खादीके कपड़े पहन रखे हैं उसने । शायद कॉंग्रेसका आदमी है । है तो वह छोटा पर उसके मिज़ाज तो बादशाहको भी मात करते हैं।

(४) वह कॉंग्रेसका हो चाहे रॅंगरेजका हो । हुजूरको राजकी चौखटमें पॉंव रखा कि कैसा भी शेर एकदम बकरी ही बना समझो।

(५) आपके हुक्मकी देर है कि वह यहाँ आया ही समझिये।

(६) अच्छा मैं अभी आया !

समझो ।...बड़ो अच्छो आदमी हे (१)

(कामदारके मुँहकी ओर देखता है।)

कामदार: हाँ, हाँ ! (अन्यमनस्क होकर)

महाराज: एसा आदमीके तो जरूर बनाके रखणो चइये । कोन जाणे कोण वखत केसो काम पड़े ?...मगर आज कल ऊ उदास दिखे हे। क्यों कामदार साब काँई बात हे आ ? काँई हुजूरकी ओपर खपा, मर्जी हे के काँई बात हे ? (२)

कामदार : नहीं एसी तो कोई बात नहीं है । लेकिन आदमीको जरा सोच समझकर काम काम करना चाहिये ।

महाराज :आप जसा सरदार उणके पीठ पीछे होय तो कायकी कमी ? (३)

कामदार : अरे महाराज, ब्राह्मणको आशिर्वाद मिल्याँ पर ठाकुरकी ठकुराईमें काँई कमी आई सके हे ? (४)

महाराज : नई साब आपका पाछर कोईकी बात केसे बण सके हे ! समुन्दरसिंगके तो आपके हाथमें रेणोच पड़ेगा । (५)

(इतनेमें समुन्दरसिंग घबराया हुआ प्रवेश करता है ।)

महाराज : को ठाकुर साहब काँई बात हे ? (६)

(१) समुन्दरसिंग भी क्या आदमी है ? काम बताया नहीं कि हुआ है। समझो । बड़ा अच्छा आदमी है ।

(२) ऐसे आदमीको तो जरूर बनाकर रखना चाहिये । कौन जाने किस समय कैसा काम पड़े ? मगर आज कल वह उदास मालूम पड़ता है। क्यों कामदार साहब, क्या बात है यह ? क्या हुजूरकी उसपर खफ़ा मर्ज़ी

समुन्दर : काँई नी ! काँई नी ! (कामदारको) ए आप जरा एँ पधारो। थोड़ी बात करणी हे । (१)

(इतना कहकर समुन्दरसिंह अन्दर चला जाता है । उसकी गम्भीर मुद्राको देखकर कामदार दरवाजेकी तरफ़ देखता ही रहता है ।)

महाराज : काँई देखन्या हो, कामदार साब ? देखो नी समुन्दरसिंग काँई के हे (२)

(कामदार गर्दन हिलाता हुआ समुन्दरसिंगका अनुसरण करता है । महाराज सिर खुजलाता हुआ दरवाजे तक जाता है । उसकी बात-चीतको सुननेका प्रयत्न करता है । लेकिन सुनाई न देनेके कारण वह वहाँ वापिस कुर्सीपर बैठने का प्रयत्न करता है । इतनेमें ग्रामोफोनपर नजर पड़नेके कारण उसके पास जाता है और एक दो रेकार्ड देखकर उसमेंसे एक चढ़ानेकी कोशिश करता है । इतनेमें भेरू बलाई रोती सूरत लेकर स्टेजके एक किनारे आकर खड़ा होता है ।उसको देखकर महाराज उसे पूँछता है ।)

महाराज : क्यों रे भेन्या ? काँई बात हे ? (३)

(भेरू भावनातिरके के कारण नहीं बोल पाता । उसके आहत स्वाभिमान के कारण चेहरेपर प्रकट होती हुई व्याकुलताको महाराज भाँप लेता है और हाथकी रेकार्डको वहीं टेबलपर छोड़कर तीरकी तरह भेरू की ओर जाता है ।)

महाराज : क्यों रे भेन्या, बोले क्यों नी हे रे ? गूँगो हो गयो काँई ? (४)

भेरू : हजूर, म्हाराके हजूर, बस हजूरसे मिलाई दो म्हारा बाप । इत्ती अरज हे, महाराज ! (५)

---

(१) कुछ नहीं ! कुछ नहीं ! ए जरा आप इधर पधारिये । थोड़ी बात करना है ।

(२) क्या देख रहे हैं, कामदार साहब ? देखिये तो समुन्दरसिंह क्या कहता है ?

(३) क्यों रे भेन्या ? क्या बात है ?

(४) क्यों रे भेन्या ? बोलता क्यों नहीं ? गूँगा तो नहीं हो गया ?

(५) ए हुजूर, मुझको हुजूर, बस हुजूरसे मिला दो मेरे बाप ! इतनी अरज है, महाराज !

महाराज : फेर के की बात के हे (१)

भेरू : के की कूँ हूँ ? रात-दन आप म्हाँ के दखो हो ओर फेर पूछो हो के केकी बात कूँ हूँ। केकी बात कूँ हूँ ? जो आदमीके आदमी समझे हे ओकी बात कूँ हूँ। केकी बात कूँ हूँ ? (२)

महाराज : तो केकी बात के हे ? काँई म्हारी बात करे हे ? (३)

भेरू : अरे नी महाराज ! केवी बात को हो ? (४)

महाराज : (झल्ला कर) तो फेर साफ़ साफ़ क्यों नी बताय हे के के बात हे ? म्हारे चिवलाय बदमाश ? (५)

भेरू : अरे माराज में तो बदमाश नी हूँ। बदमाश तो कोई ओर हे उणाँ समुंदरसिंग ने म्हाँ के तबा कर डाल्यो हे। म्हारा पामणाके धोलधप करी ने म्हारी इज्जत धूलमें मिला दी हे। म्हारी बेराँ के बेइज्जती करीने म्हारे काँई कोवी नी रख्यो। (झटकेसे महाराजकी ओर मुड़कर) ऐसो जल्लाद हे ऊ समुंदर ! (६)

---

(१) फिर किसकी बात कहता है ?

(२) किसकी कहता हूँ ? रात दिन आप हमको देखते हो और फिर मुझको पूछते हो कि किसकी बात कह रहा हूँ ? किसकी बात कह रहा हूँ ? जो आदमीको आदमी नहीं समझता उसकी बात कह रहा हूँ। किसकी बात कह रहा हूँ ?

(३) तो किसकी बात कहता है ? क्या कामदार साहबकी बात कहता है, कि मेरी बात कहता है ?

(४) अरे नहीं, महाराज ! कैसी बात कहते हो ?

(५) तो फिर साफ़ साफ़ क्यों नहीं बताता कि किसकी बात कह रहा है। यह बात नहीं वह बात नहीं। फिर किसकी बात है ? मुझसे मखौल करता है बदमाश ?

(६) अरे महाराज मैं तो बदमाश नहीं हूँ। बदमाश तो कोई और है। उस समुंदरसिंगने हमको तबाह कर डाला है। हमारे मिहमानको मार-पीट कर हमारी इज़्ज़त धूलमें मिला दी है और हमारी औरतोंको बेइज़्ज़त करके हमें कहींका भी नहीं रखा। ऐसा जल्लाद है वह समुंदर...

(कामदारकी ओर कनखियोंसे देखता है। कामदार जो कि अभीतक ... घूम रहा है पीठ फेरकर महाराजकी ओर रहस्यमय कटाक्ष फेंकता ... इतनेमें समुंदरसिंग राजलको धक्का देते हुए रंगभूमिपर लाता है ... उसे अन्दरके कमरेमें जानेके लिए बाध्य करता है। राजल समुंदरसिंग ... अत्याचारसे अपनी रक्षा करनेके लिए कामदार और महाराजसे दुहाई माँगती है। किन्तु दोनों पत्थरकी मूर्तिकी तरह निश्चेष्ट खड़े रहते हैं। अपनी सर्वथा असहाय स्थितिमें भी वह चिल्लाकर तथा क्रोधके निदेशक त्वेषपूर्ण हाव-भाव द्वारा समुंदरसिंगका प्रतिरोध करती है। किन्तु आखिरकार राजलकी कुछ नहीं चल पाती। वह असफल होती है। समुन्दरसिंह उसे जबर्दस्ती सामनेके द... वाजेसे अन्दर ले जाता है। थोड़ी देरसे मोती (जागीरदारका एक सेवक, जागीरदारकी बन्दूक, हंटर, पानीकी बोतल, कारतूसोंकी माला और कमरपट्टे के साथ प्रवेश करता है। महाराज और कामदार उसे देखकर चौंकते हुए उससे पूछते हैं।)

महाराज : हजूर पधार्या काँई ? (२)

नौकर : हाँ, होकम (कहता हुआ अंदरके कमरेमें जाता है।)

(इतनेमें जागीरदारका स्टेजपर प्रवेश। जागीरदार शिकारी ड्रेसमें हो... है। उसके कोटके सारे बटन खुले होते हैं। वह रूमालसे हवा करता हुआ ...कोचपर आरामसे बैठ जाता है।)

जागीरदार : कहिये महाराज, गत दिनसे जो लिंगधरजीका अभिषेक ... रहा था, वह ठीक ठीक समाप्त हुआ ?

महाराज : हुजूरके पुण्य प्रतापसे सब सुख-शांतिसे कार्यसिद्धि हुई है ...रके श्री तीर्थ और प्रसाद भेंट लाया हूँ। (३)

... आरामके लिए ही बनी है। अरे, उसकी इज्जतका सवाल क्या ?... ...रसिंगने और दूसरी गलती भले ही की हो। पर यह बात तो उसने ...रयोंकी की है। यह मौका मत चूकिये। बहती गंगामें हाथ धो लो। ...को खुश करनेके लिए यह तो बादल बिजली योग है रे भाई।

...२) हजूर पधारे क्या ?

...३) हुजूरके पुण्यप्रतापसे सब सुखशांतिसे कार्य सिद्धि हुई है।

सुप्रि : इसे पूछनेमें आपको कोई खास दिक्कत तो नहीं है ?

फ़क़ीर : दिक्कत और मुझे ?

सुप्रि : तो फिर ? कोई वैसी बात हो, तो हम लोक तनहाईमें
बातचीत कर सकते हैं।

फ़क़ीर : अरे खुदाके बंदे ! तू मुसलमान होकर मुझसे इस तरह
बातचीत करता है।

सुप्रि : क्यों, क्यों ?

फ़क़ीर : तू मुझको तनहाईमें ले जाकर क्या बात पूछना चाहता है ?
मुझे तो तभीसे यह शक हो रहा है कि हम लोगोंकी तरह तेरे भी सरपर
कहीं शैतान तो सवार नहीं हो चुका है ?

रामसुंदर : क्यों राजाके तो आप [illegible]

मुसलमान शैतान कहते हैं। (सुप्रिंटेंडेंट कुछ विचलित हो कर कुर्सीपरसे उठ खड़ा हो जाता है। उसको लक्ष्य करके फिरसे फ़कीर कहता है।) मुझे मालूम है कि आप मुसलमान हैं। इसीलिये मुझे पूरा पूरा यक़ीन था कि आप अपने दीन-ओ ईमान पर कायम रह कर इंसाफ़को पसन्द करेंगे। लेकिन मैं तो तबसे यही महसूस कर रहा हूँ कि आप असलियतको नहीं देखना चाहते हैं, उसको ढाँकना चाहते हैं।

सुप्रिं : कौन मैं ? हूँ, हूँ, हूँ ? असलियत क्या है इसकी ही तो तफ़्तीश चल रही है।

फ़क़ीर : तब मेरा कुछ कहना नहीं है। लेकिन बात अगर इसके उलटी हो तो तुम्हें याद रहे कि तुम असली मुसलमान नहीं हो। उस वक़्त तुम शैतान हो गये। तुम तफ़्तीश करो। यहाँ घर घरमें जाकर असलियतको ढूँढ़ो और समझो। घर घरमें जाकर देखो कि जागीरदारने लोगों को किस तरह उनको भूखों मार मार कर सूखा लक्कड़ बना दिया है किस तरह उनको लूट खँसोट कर, जुल्मोंके पहाड़ ढाकर एकदम मुफ़लिस, मायूस बल्कि जीतेजी मुर्दा बना रखा है। उस बेचारे मेहूको देखिये तो पता चलेगा कि उसपर की हुई ज़्यादतियोंसे वह किस तरह पागल हो गया और अपनी तमाम ज़िंदगी ही से हमेशाके लिये हाथ धो चुका है। आप अगर फ़रमायें तो मैं उस मेहूको बुलाऊँ ?

सुप्रिं : आप क्यों जाते हैं ? मैं ही बुलवा लेता हूँ। अरे कौन है ? ज़रा उस मेहूको बुलाओ।

(मेहूको लाकर एक कान्स्टेबल पेश करता है। उसकी मुद्रा करुणा-जनक होती है। उसकी शून्य और निस्तेज आँखें, कभी हँसना और एकदम मायूस हो जाना, अपने शरीरको जानवरों जैसा खुजलाना, मक्खीको मारने की चेष्टा करना, इत्यादि बातोंसे उसकी घोर मानसिक उथल-पुथल का परिचय मिलता है। सुप्रिंटेंडेंट उसकी ओर कुछ देर गौरसे ताकता है।)

फ़क़ीर : यह है जागीरदारी इंसानियतका असली नक्शा। किसी ज़माने में यह मेहू भी आप और हम जैसा इंसान था। लेकिन आज वह हैवानसे भी बदतर बना दिया गया है। उसके तमाम अरमान जुल्मों सितमके पहाड़ों-

के नीचे कुचल दिये गये हैं। उसकी ज़िन्दगीका गुलशन एकदम ख़ाक हो गया है।

मुंशि : खुदाके बन्दोंका यहाँ यह हाल हो रहा है। और इधर ये जागीरदार और उनके ये हाकिम और हुक्काम उनकी बदौलत खुशहाल होकर घूम रहे हैं, इनके खूनको चूसकर फूल कुप्पे हो रहे हैं। जिसकी आँखें हों, वह उसे देखे और कहे कि क्या खुदाने इंसानको इस तरह जुल्म उठानेके लिये ही पैदा किया है।

(इतनेमें मुहर्रिर मोतीके साथ आता है। मोतीके हाथमें कपड़ोंकी थैली होती है जिसे वह खुलवाता है।)

फ़क़ीर : यह देखिये, यही उस बेचारी औरत राजलके कपड़े हैं।

(सेठ उन कपड़ोंकी ओर कुछ देर एक टक देखता है और फिर उन-पर टूट पड़ता है और पागलकी तरह "राजल! राजल!" कहकर हँसता है।)

फ़क़ीर : देखिये, इस नज़्ज़ारेको गौरसे देखिये। क्या सचाईका इससे भी ज़्यादह कोई सुबूत हो सकता है। यह राजलका खून नहीं है, [illegible]

गाड़ीमें ले जानेके लिये तैयार कीजिये। समुन्दरसिंगको आप किसी कान्स्टे-बलके हवाले कर दीजिये। मैं जाकर राजलकी लाशकी तब तक तफ्तीश कर आता हूँ। अच्छा! देखना इस इंतजाममें किसी कदर भी खामी न रहे। (जाता है।)

मुहर्रिर: चलिये, जनाब कामदार साहब! अरे कोई है बाहर?

(परदेमें) जी।

मुहर्रिर: इधर आओ!

(एक कान्स्टेबल आता है।)

मुहर्रिर: नन्नेखाँ! इस समुन्दरसिंगको अपनी हवालातमें रखो और देखो पाँच जवानोंको मेरे साथ चलनेके लिये तैयार रखो।

नन्नेखाँ: बहुत अच्छा! (समुन्दरसिंगको) चलो जी! (जाते हैं।)

महाराज: अरे मुहर्रिर साहब आप यो काँई कऱ्यो हो? (१)

मुहर्रिर: मैं क्या कर सकता हूँ? हाकिमके हुक्मकी पाबंदी करना ही होगी।

महाराज: तो काँई अब काँई नी हो सके है (२)

मुहर्रिर: मेरे सामने गिड़गिड़ानेसे क्या हो सकता है? जो कुछ कहना हैं वह उन्हींसे कहो।

महाराज: अरे मैंने तो बोत कही सुणी। ओर सुप्रिडंट साब मान भी गया था। क्यों कामदार साब? पण उणा फकीरने फेर एसो जादू चलायो उणाँ पर, के ऊ हजारको नोट बी गयो ओर तक्तो बी उलट गयो। (३)

मुहर्रिर: अरे महाराज, आज कल जमाना तेजीसे तब्दील हो रहा है। अब वह पुरानी पोलें नहीं चल सकतीं जब कि आप रिआयाको चाहे जैसा सताकर उनकी झोपड़ियोंको जलाकर अपने हाथ सेंका करते थे। समझे।

---

(१) अरे मुहर्रिर साहब, आप यह क्या कर रहे हैं?

(२) तो क्या अब कुछ नहीं हो सकता?

(३) अरे मैंने तो बहुत कहा, सुना और सुपरिटेंडेंट साहबने मान भी लिया था। क्यों, कामदार साहब! पर उस फकीरने फिर ऐसा जादू चलाया उनपर कि वह हजार रुपयेका नोट भी गया और तख्ता भी उलट गया।

आजकल रिआयाकी ताक़त हर जगह बढ़ रही है। अब वह मनमाना नहीं होने देगी। जब अंग्रेज सरकार के पैर ही रिआयाकी बढ़ती ताक़तके सामने उखड़ रहे हैं तो तुम्हारे ये ज़मीनदार और जागीरदार ग़रीब हैं किस गिन्ती में? चलो कामदार साहब, अपने को जाने की तैयारी करनी होगी।

कामदार : अच्छा, महाराज, अब तो हम जाते हैं। आप अब बैठे-बैठे भगवतीकी पूजा किया करना (जाते हैं)

महाराज : हाथ थारीकी। यो तो काँईको काँई हो गयो। और एक तरे से ठीक बी है। एकली बापड़ी भगवती बी तो इत्ता बड़ा नया ज़मानाके सामने काँई करेगी? अरे (१)

समे बड़ी बलवान—ने
वोई अर्जुन ने वोई बाण ॥

(१) हाय, तेरीकी। यह तो क्या का क्या हो गया। और एक तरहसे ठीक भी है। अकेली बेचारी भगवती भी तो इतने बड़े नये ज़मानेके सामने क्या करेगी।

: समाप्त :

(कामदारकी ओर कनखियोंसे देखता है। कामदार जो कि अभीतक स्टेज पर घूम रहा है पीठ फेरकर महाराजकी ओर रहस्यमय कटाक्ष फेंकता है।

इतनेमें समुंदरसिंग राजलको धक्का देते हुए रंगभूमिपर लाता है और उसे अन्दरके कमरेमें जानेके लिए बाध्य करता है। राजल समुंदरसिंगके अत्याचारसे अपनी रक्षा करनेके लिए कामदार और महाराजसे दुहाई माँगती है। किन्तु दोनों पत्थरकी मूर्तिकी तरह निश्चेष्ट खड़े रहते हैं। अपनी सर्वथा असहाय स्थितिमें भी वह चिल्लाकर तथा क्रोधके निर्देशक द्वेषपूर्ण हाव-भाव द्वारा समुंदिसिंगका प्रतिरोध करती है। किन्तु आखिरकार राजलकी कुछ नहीं चल पाती। वह असफल होती है। समुन्दरसिंह उसे जबर्दस्ती सामनेके दरवाजेसे अन्दर ले जाता है। थोड़ी देरसे मोती (जागीरदारका एक सेवक) जागीरदारकी बन्दूक, हंटर, पानीकी बोतल, कारतूसोंकी माला और कमरपट्टे के साथ प्रवेश करता है। महाराज और कामदार उसे देखकर चौंकते हुए उससे पूँछते हैं।)

महाराज : हजूर पधार्‍या काँई ? (२)

नौकर : हाँ, होकम (कहता हुआ अंदरके कमरेमें जाता है।)

(इतनेमें जागीरदारका स्टेजपर प्रवेश। जागीरदार शिकारी ड्रेसमें होता है। उसके कोटके सारे बटन खुले होते हैं। वह रूमालसे हवा करता हुआ सोफेपर आरामसे बैठ जाता है।)

जागीरदारः कहिये महाराज, सात दिनसे जो लिंगेश्वरजीका अभिषेक हो रहा था, वह ठीक ठीक समाप्त हुआ ?

महाराजः हुजूरके पुण्य प्रतापसे सब सुख-शांतिसे कार्यसिद्धि हुई है हुजूरके यो तीरथ और प्रसाद भेंट लाया हूँ। (३)

अपने आरामके लिए ही बनी है। अरे, उसको इज्जतका सवाल क्या ?... समुन्दरसिंगने और दूसरी गलती भले ही की हो। पर यह बात तो उसने लाख रुपयोंकी की है। यह मौका मत चूकिये। बहती गंगामें हाथ धो लो। मालिकको खुश करनेके लिए यह तो बादल बिजली योग है रे भाई।

(२) हजूर पधारे क्या ?

(१) हुजूरके पुण्यप्रतापसे सब सुखशांतिसे कार्य सिद्धि हुई है।

(जागीरदार महाराजकी बात पर केवल हलकी हँसी हँसता है। इसके बाद वह नौकरसे पूँछता है :)

जागीरदारः अरे मोती, माँ साब अस्नान करी लिया ?

मोतीः हाँ होकम।

महाराजः तो में जाइने मा सावके तीरथ प्रसाद भेंट कर आऊँ ? (१) (जाता है।)

कामदारः देख मोती, अंदरसे बड़ी आलमारीमेंसे लाल वस्तो उठाई ला। (मोती जानेको होता है तब) और देख, पहिले अंदरका कोठाकी काँच की आलमारीमेंसे सुराई और गिलास उठा ला तो।

जागीरदारः नहीं, नहीं, वह नहीं। देख तो बड़े पलंगके सिरहाने परदेके पीछे छोटे टेबलपर रखी हुई सुराही ले आ।

मोतीः जो होकम। (कह कर जाता है।)

जागीरदारः कामदार साहब, मुन्तजिम साहबकी ओरसे जो सरक्यूलर आया था उसकी क्या तजवीज की ?

कामदारःवह कस्टम ड्यूटीके बारेमें आया हुआ सरक्यूलर न ?

जागीरदारः हाँ, हाँ, वही तो ! परसों आया सरक्यूलर !

कामदारः जी हाँ ! मैंने उसपर सोचा। मुझे तो ऐसा लगता कि उसका जवाब ही न दिया जाय।

जागीरदारः नहीं, नहीं, ऐसे कैसे होगा ? जवाब तो देना होगा। आखिर जवाब देनेमें दिक़्क़त क्या है ? (इतनेमें नौकर शराबकी सुराही ला कर रख देता है और फिर चला जाता है।)

कामदारः दिक़्क़त ही तो है। सरक्यूलरका मनशा है कि कोई भी जागीरदार अपनी जागीरके अंदर चुंगी वसूल न करे। लेकिन इससे तो जागीरदारके सारे हुकूक मारे जायँगे।

जागीरदारः (गौरसे सुनता है और "हाँ, हाँ !' करता है।)

कामदारः चुंगी वसूल न करने देना यानी जागीरदारको जागीरदार कह कर उसके हाथसे सारी जागीर छिना लेना ही तो हुआ ? जागीरदारको अपनी जागीरमें मुक़म्मिल अख़्तियारात हैं। चुंगी लगाना या न लगाना, यह जागीरदार

(१) तो मैं जाकर माँ साहबको तीर्थ प्रसाद भेंट कर आऊँ ?

की मर्ज़ीका सवाल है। वह चाहे तो खुद मुख्त्यादारीसे चुंगी बंद कर सकता है। लेकिन मुंतज़िम साहबको सरक्यूलर आनेका मतलब यह है कि अब जागीरदार चाहे तो भी चुंगी वसूल नहीं कर सकता। यानी जागीरदारके तमाम हुकूक ही छिन गये। मेरी समझमें यह सरक्यूलर तो तमाम दरबार पालिसी ही को उलट रहा है। ऐसी सूरतमें यह निहायत ज़रूरी है कि (इतनेमें नोकर बस्ता लाकर टेबल पर रखता है। और कामदार बोलते-बोलते बस्ते की ओर जाता है।) कोई एक जागीरदार इस सरक्यूलरका जवाब न देते हुए, इस मामले पर तमाम जागीरदारानकी राय ली जाकर ही, उस सरक्यूलर की तजवीज़ की जाय।

जागीरदारः हाँ, हाँ, ! (जागीरदार उठकर हाथ पीछे बाँधकर घूमने लगता है। कामदार, बोलना खतम होने पर, बस्तेकी गठान खोलना चाहता है। लेकिन बीचमें रुक कर)

कामदारः और फिर उस सरक्यूलरका जवाब देना क्या मामूली बात है? आज सारी जागीरके खर्च, शिकारके खर्च, हुज़ूरके खानगी खर्चे ये सब कैसे चलेंगे?

जागीरदारः हाँ, हाँ, बात तो बिलकुल ठीक है। लेकिन...(कहकर सोफ़े पर बैठता है। इतनेमें मोत्या आता है और सुराही और ग्लास लेकर जागीरदारके बाजूमें खड़ा हो जाता है। जागीरदार उसके हाथसे ग्लास लेकर शराब पीता है। मोत्या सुराहीको जागीरदारके पास ही एक छोटी टेबल पर लाकर रख देता है। जागीरदार अपनी तबियतसे सुराहीमेंसे शराब ग्लासमें भर-भर कर पीता जाता है।)

कामदारः इस सरक्यूलरका मामला तो ऐसा नहीं है कि जिस पर मिनट दो मिनटमें सोचा जाय। कुछ और मामलात हैं, जिनपर हुज़ूरका गौर फ़रमाना ज़रूरी है। हुक्म हो तो पेश करूं!

जागीरदारः ऐं ! हाँ, !

कामदार : (कागज़ हाथमें लेकर) ये औंकालेईका नक्शा है। (दूसरा कागज़ पेश करता है।) पटवारीने औंकालेईके हदका नक्शा का है। उसका

ये नक्शा। इस नालेसे लगाकर इस पश्चिमकी अमराईतककी ज़मीन बड़े हुज़ूर ने अपने आख़िरी वक्त अपनी हदमें कर दी थी जिसका दस्तावेज़ यह पेश है। यह ज़मीन छोटे रावलेने अपनी ओर तोड़ ली है। अब यह मामला थोड़ा संगीन हो रहा है। क्योंकि अपने संतरेके बागीचेकी आबपाशीमें उससे खलल पहुँच रहा है।

जागीरदार : अच्छा, इस मामलेको अभी रहने दो। इस पर मैं सोचूँगा। और देखो यह फाइल मेरे कमरेमें पहुँचा दो। (फिर शराब पीता है। इतने में ज्यों ही कामदार दूसरा मामला पेश करता है, त्यों ही उसका हाथ ठिठक सा जाता है।)

कामदार : जो होकम! यह जंगलके ठेकेदारका दूसरा मामला है। ये टेंडर आये हैं। सबसे ऊँचा टेंडर मौजीरामका है। उससे नीचे है गुरुबख़्शसिंगका।

जागीरदार : फिर?

कामदार : काम मौजीरामको जरूर दिया जाना चाहिये। लेकिन एक तो मौजीराम अपने लिये नया आदमी है। दूसरे, जहाँ जहाँ उसने ठेके लिये, वहाँ उसका लेन देन ठीक नहीं रहा। गुरुबख़्शकी बात ऐसी है कि वह अपना बापरा हुआ आदमी है। पैसा थोड़ा कम मिलेगा जरूर। लेकिन जंगलकी शान बनी रहेगी। फ़िर जैसी हुज़ूरकी मर्ज़ी।

जागीरदार : कामदार साहब, ऐसा कीजिये कि इन मामलोंको अपन अब फिर देखेंगे।

(इतनेमें महाराज पीछेसे आता है और खड़ा रहता है।)

कामदार : जो होकम! अँ, अँ। एक छोटा सा मामला और है। उस पर भी गौर फ़रमा लिया जाय तो बेहतर हो। समुंदरसिंगने थोड़ी ज़मीन की दरखास्त की थी। उसे बहुत दिन हो गये।

जागीरदार : हाँ, मुझे याद है। मगर क्या किया जाय? देखो, कामदार साहब, आप इसके बारेमें सोचो। और कोई रास्ता निकल सके तो देखो।

कामदार : जो होकम!

(महाराजको आया हुआ देखकर कामदार शराबकी सुराही और ग्लास

हटाना चाहता है। लेकिन महाराज उसको रोकता है।)

महाराज : रेन दो रेन दो, कामदार साहब! हूँ आयो तो ओके हटावाकी काँई जरूरत हे? (१)

(कामदार महाराजकी बातको अनसुनी करके सुराही ले ही जाना चाहता है। लेकिन महाराज जाकर उसे रोक देता है।)

महाराज : केसी बात करो हो, कामदार साब! अरे (२)

विप्रनमें वे विप्र नहीं जो न छनावें भंग।
वे राजा राजा नहीं जो न चढ़े रतिरंग॥

(दोहा सुनकर जागीरदार खुश हो जाता है और हलकी हँसी हँसता है।)

जागीरदार : वा महाराज! (थोड़ा हँसकर) क्या दोहा है? (जागीरदार यह बात कामदारके मुँहकी तरफ़ देखकर कहता है।)

कामदार : नहीं, नहीं, महाराज! ये चीजें आपके सामने शोभा नहीं देतीं।

महाराज : क्या कामदार साहब आप बी शोभाकी बात करो हो? अरे ये चीजें राजाके शोभा नी दे तो काँई तूँ, वो ने लंगोटी शोभा देगा? (जागीरदार फिर हँसता है।) अरे ये तो राजा होनका भूषण हे। "यौवने विषयैषिणाम्" यही तो कालिदास कहके मर गया। क्या? बचपनमें विद्याध्ययन तो होता ही हे, पण यौवनमें, जो हे सो, राजाके विषयासक्ति करणीच चइये। खेर, या बात बी जाबा दो। भगवान्ने ये जो सब सुरा पेदा किया है, तो म्हारे या बताओ के काँई वास्ते पेदा किया हे? अगर आप यूँ को के दुनियाँ का तमाम सुख विलास खराब हे तो एसी चीजके पेदा करवा वालो भगवान् आप या समजो के काँई बेवकूफ थो? बोलो दो जुवाब? (जागीरदार हँसता है।) लो साब एं। रखो आके याँ (कामदार सुराही रखता है।) (३)

(१) रहने दो, रहने दो कामदार साहब! मैं आया तो इसे हटानेकी क्या जरूरत है?

(२) कैसी बात कर रहे हैं, कामदार साहब!

(३) क्या कामदार साहब, आप भी शोभाकी बात करते हैं? अरे

जागीरदार : लो महाराज, आओ बैठो। कामदार साहब, महाराजके लिये भी कुछ जलपानका इन्तज़ाम कराइये।

कामदार : जो होकम ! महाराजने तो आज वहार कर दी। (कहकर हँसता हुआ जाता है।)

महाराज : लोगहोर म्हारा बारा में अजीब ख्याल करे हे। म्हारे तो वीजाणे एकदमसे वेअकूफ ई समझे हे। वी समझे हे के माराजने भोगविलास की चीज देखी के एकदमसे भड़क्या। और ब्राह्मणकी बात तो में नी के सकूँ हूँ। पण म्हारा बारामें तो या बात नेट्टू ई लागू नी पड़े। में जमानाकी रफ़्तार के बोत अच्छी तरेसे पेचाणूँ हूँ। अरे, ब्राह्मण होयो तो वी ओके जमाना का साँते तो रेणोच पड़े हे केनी? (१)

जागीरदार : ठीक बात है।

महाराज : हँ, हँ, हँ, हँ! ओर या चीज तो एसी हे के ओका बारामें जमानाकी कोई बातच लागू नी हो सके हे। अरे या तो सदामतछे बल, बुद्धि और विद्याके वढ़ावा आती रही हे। (२)

ये चीज़ें राजाको शोभा नहीं देंगी? अरे, ये तो राजाओंके भूषण हैं। "यौवने विषयैषिणाम्" यही तो कालिदास कह कर मर गया। क्या? वचपनमें विद्याध्ययन तो होता है। पर यौवनमें, जो है सो, विषयासक्ति करना ही ही चाहिये। खैर, यह बात भी जाने दो। भगवान्ने ये जो सब सुख पैदा किये हैं, तो, मुझे यह बताइये कि, किस लिये पैदा किये हैं? अगर आप यह कहते हैं कि दुनियाँके तमाम सुख-विलास खराब हैं, तो ऐसी चीज़को पैदा करनेवाला भगवान्, आप यह समझो कि क्या वेवकूफ़ था? बोलो, दो जवाब। लाइये इधर उसको। रखिये उसको यहाँ।

(१) लोग मेरे में अजीव ख़्याल करते हैं। मुझे तो वे मानों एकदम वेवकूफ़ ही समझते हैं। वे समझते हैं कि महाराजने जहाँ भोग-विलासकी चीज देखी कि वे एकदमसे भड़के। दूसरे ब्राह्मणोंकी बात तो मैं नहीं कह सकता। लेकिन मेरे वारेमें यह बात विल्कुल लागू नहीं पड़ती। मैं ज़मानेकी रफ़्तार अच्छी तरहसे पहचानता हूँ। अरे, ब्राह्मण हुआ तो भी उसको ज़मानेके साथ तो रहना पड़ता है कि नहीं?

(२) हँ, हँ, हँ, हँ! और यह चीज तो ऐसी है कि उसके बारेमें

जाके पियेसे वृहस्पति होत जो मूरख
यों मतिदानि सुरा है ॥
जाके पियेसे नपुँसक भी वर वीर बने
वलदानि सुरा है ॥
जाके पियेसे उड़ैं छिनमें दुखके गिरि
यों सुखदानि सुरा है ॥
जो परताप हैं या जगमें, सबकी जड़में
बस एक सुरा है ॥

(कवित्त सुननेके बाद जागीरदार हँसकर और यह कहकर कि "भई वाह ! बात बिलकुल ठीक है ।" एक ग्लास भरता है और पीता है ।)

महाराज : अरे या तो चौदा रत्नोंमेंसे एक हे । या देवी तो एसी हे कि साक्षात् धनवन्तरिने एका गुण बखान्या हे । ओर सुरा जो हे सो अकेली आप या समझो कि इत्तो प्रभाव नी बता सके हे । जद तलक वारुणीको संयोग ओकी बड़ी बेन कामिनीसे नी होय; वाँ तलक आनन्दका परमाणमें थोड़ी खामीच बणी रे हे । वारुणि और कामिनीको योग तो आप समझो कि गंगा-जमनाका संगम हे । ई दोई तो अलग रेच नी सके हे । क्योंकि समुद्र मंथनका समे वारुणिको पात्र लेईनेच तो उर्वशी अप्सरा पेदा हुई । (१)

[illegible]मानेकी कोई बात लागू होती ही नहीं । अरे यह तो सदासे बल, बुद्धि और विद्याको बढ़ानेवाली रही है ।

(१) अरे यह तो चौदह रत्नोंमेंसे एक है । यह देवी तो ऐसी है कि साक्षात् धन्वन्तरिने इसके गुण बखाने हैं । और सुरा, जो है सो, अकेली, आप यह समझिये कि, इतना प्रभाव नहीं बता सकती । जहाँ तक वारुणीका संयोग इसकी बड़ी बहन कामिनीसे नहीं होता, वहाँ तक आनन्दके प्रमाणमें थोड़ी खामी बनी ही रहती है । वारुणी और कामिनीका योग, आप यह समझो कि, गंगा-जमुनाका संगम है । ये दोनों तो अलग रह सकती ही नहीं । क्योंकि समुद्रमन्थनके समय वारुणीका पात्र लेकर ही तो उर्वशी अप्सरा पैदा हुई थी ।

यामिनिको धन चांदनि है तस मेघ घटा
धन दामिनि है ॥
पद्मिनि ज्यों रनिवासको है धन, त्यों
धन तालको हंसिनि है ॥
कोयलकी धुनिसे मनमोहिनि, वह
ऋतुराज वसंत धनी है ॥
कामिनिको धन वारुणि है, पुनि
वारुणिको धन कामिनि है ॥

जागीरदार : (हँसकर) वारुणी और कामिनी ! हाँ हाँ ! वारुणी और कामिनी ! कामिनी ? हाँ हाँ ! कामिनी ! (सुराहीकी ओर बतलाकर) वारुणी और (बाँईं ओर बगलमें इशारा करके) कामिनी ! बस !

महाराज : हाँ हजूर ! वारुणी और कामिनीके योगका नामच तो स्वर्ग है ! सुरा और अप्सरा येई तो स्वर्गका दो रत्न है। (१)

(इतनेमें मोती ट्रेमें चाय लाता है।)

महाराज : कामदार साब काँ हे ? (२)

कामदार : हाज़िर आया।

जागीरदार : कामदार साहब, बैठो। लो चाय ! (इतनेमें चाय देकर नौकर चला जाता है। महाराज और कामदार चाय पीने लगते हैं और जागीरदार शराबका जाम भरते भरते हँसते हुए) वारुणी और कामिनी ! हाँ, हाँ, महाराज ! वह कवित्त ! क्या है वह कवित्त ! सुनो कामदार साहब ! वह कवित्त !

कामदार : सुनाओ, महाराज, कौन सा कवित्त है ?

(महाराज फिरसे कवित्त सुनाता है। कवित्त सुननेके बाद जागीरदार उठ कर घूमता है। समुंदरसिंग तीनोंकी आँखें बचा कर इनकी बातें सुनता है।)

---

(१) हाँ हुजूर ! वारुणी और कामिनीके योगका नाम ही तो स्वर्ग है। सुरा और अप्सरा ये ही तो स्वर्गके दो रत्न हैं।

(२) कामदार साब कहाँ हैं ?

जागीरदार : बस यही तो स्वर्गके दो रत्न हैं। वारुणि और कामिनी। महाराज कहाँ हैं? अरे कहाँ हैं? चलो, महाराज चलो! चलो बागीचेमें चलें! आपकी बातोंसे तो आदमी पागल हो जाता है।

महाराज : हुजूर, महाराज पागल कर सकता है तो पागलपनका इलाज भी कर सकता है। वह नन्दनवनके आनन्दकी बात कर सकते हे तो उसकू जमीन पे उतार कर ला भी सके हे। (कामदारकी ओर रहस्य-पूर्ण कटाक्ष फेंकते हुए) एक रत्न मेनें आपकी खिदमतमें पेश कियो हे तो, दूसरो रत्न भी आपकी खिदमतमें पेश कर सकूँ हूँ। क्यों कामदार साब? (१)

कामदार : बेशक! बेशक!

महाराज : और एका वास्ते हजूरके बगीचामें जावाकी कोई जरूरत नी हे! दोपेरको वखत होयो हे। हुजूर आपणा कमरामें ई पधारो। क्यों कामदार साब? (२)

कामदार : बेहतर है।

जागीरदार : ऐसा? क्या कहा? ऐसा? अच्छा! चलो।

(जागीरदार जाता है और उसके पीछे कामदार भी जाता है। महाराज दरवाज़े तक जाता है। इतनेमें समुंदरसिंग कामदारकी बाँह पकड़ कर धीरेसे स्टेजपर वापिस लाता है।)

महाराज : (उसकी पीठ ठपकारते हुए) लो समुंदरसिंग, सोनामें सुगंध है। मनकी पीड़ा दूर हो यो हमारो आशीर्वाद हे। अब लाओ हमारा

---

(१) हुजूर, महाराज पागल कर सकता है तो पागलपनका इलाज भी कर सकता है। वह नन्दनवनके आनन्दकी बात कर सकता है तो उसको जमीन पर उतार कर ला भी सकता है। एक रत्न मैंने आपकी खिदमतमें पेश किया है तो दूसरा रत्न भी आपकी सेवामें मैं पेश कर सकता हूँ। क्यों कामदार साहब?

(२) और इसके लिये हुजूरको बागीचेमें जानेकी कोई जरूरत नहीं है। दोपहरका वक्त हो गया है। हुजूर अपने कमरेमें ही पधारें। क्यों कामदार साहब?

दक्षिणा पेश करो।) (१)

समुंदर : महाराज, आपके दक्षिणा दूँ ओका पेलाँ वा मेन्याकी ओरत म्हारे दक्षिणा नी देई दे। (२)

महाराज : (एकदम पलट कर और मुद्रा बदल कर) कैसे ?

समुंदर : अरे महाराज, वो ओरत तो कालका जेसी घूम रई हे। ओर चार चार आदमी होरसे बी नी सम्हले हे।......और हजूर तो कँई पधार्‌या हे। म्हारे तो डर लगे के काँई उल्टी सीधी बात नी होई जाय। (३)

(इतनेमें परदेके अन्दर बन्दूकका एक ठहाका सुनाई पड़ता है। महाराज और समुंदरसिंग एक दूसरेकी ओर भौंचक्केसे देखते हैं। थोड़ी देरमें कामदार हाँफता हुआ अन्दरसे आता है।)

काम : महाराज, राजल तो खतम हो गई !

महाराज और समुंदरसिंग : ऍं ?

(दोनों पत्थरकी मूर्तिकी तरह अचल कामदारकी ओर देखते रहते हैं!)

---

(१) लो समुंदरसिंग सोनेमें सुगंध है। मनकी पीड़ा दूर हो। यह हमारा आशीर्वाद है। अब लाइये हमारी दक्षिणा पेश कीजिये।

(२) महाराज, आपको दक्षिणा दूँ उसके पेश्तर वह मेन्याकी औरत मुझे कहीं दक्षिणा नहीं दे दे।

(३) अरे महाराज, वह औरत तो कालिका* जैसी घूम रही है। और चार चार आदमियोंसे भी नहीं सम्हलती है।......और हुजूर तो वहीं पधारे हैं। मुझे तो डर लग रहा है कि कहीं उल्टी सीधी बात नहीं हो जाय।

(*) चंडी।

: परदा :

अंक तीसरा

मोती : ए माराज, माफ़ करो। मेने तो वात सेजमें की थी। (१)

महाराज : में थारा के माफ़ करूँगा हे नी ? जद से हूँ देखा यो हूँ के जणी वख़त जो काम मेने क्यो, ऊ एक नी होय। एसो निसल्डो वण जाय, जाणे नेट्र वेरो होग्यो रे भाई। ओका कानपे म्हारा आवाजको असर तगाद नी होय हे वापड़ा के। टेर जा! अब थारी कंबख़्ती आ गई हे। तेने देवी को अपमान तो कर्यो हे। पण वा थारो सत्यानाश कर्या पाछर नी रेगी। टेर जा (२)

मोती : ए महाराज, थाँका पाम पड़ूँ। अब की वार म्हारे माफ़ कर दो। म्हारे काँई मालम के अँई आड़ीसे जावा में राजल देवी भगवान् आपका डीलमें आजाय हे। (३)

महाराज : फेर वेई बात की हे नी। हुजूरका मूँ लग लग के तू म्हारो एसो अपमान करे हे। में काँई खवास हूँ, के परजापत हूँ के म्हारा कोई डील में आयगा ? में तो मंत्र सिद्धि करीने राजलकी आतमा के तगाद भस्म कर डालवा मंड्यो हूँ, तो तू काँई के के वा ढेढ़ की ओरत म्हारा ब्राह्मण का डील में आयगा। ठेर, म्हारो सपतशती को पाठ पूरो हो जावा दे! ओका वाद बताऊँगा थारे के ब्राह्मण के डील में काँई आया करे हेऊ। (पाठके स्थान--अपने आसन-पर जानेको मुड़ता है, परंतु बीच में ही) पर पाठ भी तो तेनें खण्डित कर दियो। अच्छो अपसुगुनी पाळे पड्यो रे! (४)

---

(१) ए महाराज, माफ़ कीजिये! मैंने तो वात सहजमें कही थी।

(२) मैं तुझे माफ़ करूँगा, है न ? जबसे मैं देख रहा हूँ कि जिस वक्त जो काम मैंने कहा, वह एक नहीं हुआ। ऐसा निसलड़ा वन जाता है मानो एकदम वहरा हो गया हो रे, भाई। वेचारेके कान पर मेरी आवाजका असर तक नहीं होता। ठहर जा। अब तेरी कंबख़्ती आ गई है। तेने देवीका अपमान तो किया है, पर वह तेरा सत्यानाश किये बिना नहीं रहेगी।

(३) ए महाराज, आपके पाँव पड़ूँ। अबकी बार मुझे माफ़ कर दो। मुझे क्या मालूम कि इधरसे जानेमें राजल देवी भगवान् आपके डीलमें आ जाती है।

(४) फिर वही बात कही न। हुजूरके मुँह लगकर तू मेरा ऐसा अपमान

मोती : पर मने काँई कर्‌यो, महाराज ? आप ई तो म्हारे मारकणा बेल ज्यूँई मारवा दोड्या । (१)

(महाराज उसके इन शब्दोंसे आहत दर्प होकर वज्रमूढ सा खड़ा हो जाता है और मोतीको शून्य नेत्रोंसे देखता रहता है ।)

महाराज : (प्रेक्षकोंकी ओर देखकर) काँई एकेच कलयुग के हे ? ब्राह्मण को एसो घोर अपमान ? (एकदम अनुष्ठान मण्डपकी ओर मुड़कर और हाथ जोड़कर) भगवती तू साक्षी हे । तेनेच म्हारे ब्राह्मण बनायो । तेनेच आखो ब्रह्माण्ड रच्यो । थारीच कृपासे ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र बण्या । और अणीच वर्ण धर्म पे यो पृथ्वी मण्डल टिक्यो हुओ थो । पण आज थारी आँख देख्याँ थागच बणाया हुआ ब्राह्मण देवता साँड बनी रिया हे । भगवती या काँई बात हे ? काँई थारे मनमें परले करवा की आई हे । ब्राह्मणने उफनता समन्दरका माँय धरतीके बाहर खींच्यो, ब्राह्मण के ई कारण तो रामचन्द्रजी राजा रामचन्द्र बणी सक्या । ब्राह्मणनेच तो चन्द्रगुप्त के सम्राट् चन्द्रगुप्त बणायो । ब्राह्मणका जोरसेच तो आज हिन्दुस्तानका राजा, सरदार और जागीरदार टिक्या हे । (कामदार आकर पीछे खड़ा होता है ।) भगवती ब्राह्मणके बलेसे तो तेरी इज्जत आज तलक इस कलयुगमें टिकी हे । म्हारो अपमान यानी ब्राह्मण वर्णको सत्यानाश । अरे फिर ई क्षत्रिय राजा, महाराजा, जागीर-दार के से टिकेगा ? यो धरम, करम यो राजपाट और हुकूमत सब अणाँ मजूर होन का हाथमें आवा वाळी हे के ? (२)

करता है ? मैं क्या नाई हूँ, या कि कुम्हार हूँ, जो कोई मेरे डीलमें आयगा ? मैं तो मन्त्र सिद्ध करके राजलकी आत्मा तकको भस्म करने चला हूँ, तो तू कहता है कि यह टकेकी औरत मेरे ब्राह्मणके दिलमें आयगी । ठहर ! मेरा सप्तशतीका पाठ पूरा हो जाने दे । उसके बाद तुझे बताऊँगा कि ब्राह्मणके डीलमें क्या आया करता है वह । पर पाठ भी तेने खंडित कर दिया । अच्छा महाराजकी पाले पड़ा है रे !

(१) पर मैंने क्या किया महाराज ? आप ही तो मुझे मारकने बैलकी तरह मारने दौड़े ।

(२) क्या इसे ही कलियुग कहते हैं ? ब्राह्मणका ऐसा घोर अपमान !

कामदार : यों काँई नाटक करी रिया हो, महाराज ? (१)

मोती : (थोड़ा स्मित करता हुआ) याच वात तो में वी केतो थो सरकार। (२)

मोत्या : अरे नी बापजी ! (३)

कामदार : बापजी गया चूल्हेमें। मेरा बाप बाहर बोतलकी राह देखते देखते आग उगल रहा है उसको मैं जाकर बोतल दूँ ?

मोत्या : तो में काँई करूँ ? रात दन काम करी करी ने मराँ ने एक ऐंसे जूतो लगाय ने एक वेंसे। आदमी एकको नौकर रे सके है। सबा बाप को बेटो तो नी वणी सके। (४)

भगवती तू साक्षी है। तेने ही ब्राह्मणको बनाया। तेने ही सारा ब्रह्माण्ड रचा। तेरी ही कृपासे ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र बने। और इसी वर्ण-धर्मपर यह पृथ्वी मण्डल टिका हुआ था। पर आज तेरी आँख देखे तेरे ही बनाये हुए ब्राह्मण देवता साँड बन रहे हैं। भगवती यह क्या बात है! क्या तेरे मनमें प्रलय करने की आई है ? तू ब्राह्मणका अपमान कैसे सहन कर सकती है ? ब्राह्मणने उफनते हुए समुद्रके अन्दरसे धरतीको बाहर खींचा। ब्राह्मणके ही कारण तो रामचन्द्रजी राजा रामचन्द्र बन सके। ब्राह्मणने ही तो चन्द्रगुप्तको सम्राट् चन्द्रगुप्त बनाया। ब्राह्मणके ही जोरसे तो हिन्दुस्तानके राजा, महाराजा, सरदार और जागीरदार टिके हुए हैं। भगवती ! ब्राह्मणकी ही वजहसे तो तेरी इज़्ज़त आज तक इस कलियुगमें टिकी है। मेरा अपमान यानी ब्राह्मणवर्णका सत्यानाश। और फिर ये क्षत्रिय राजा, महाराजा, जागीरदार कैसे टिकेंगे ? क्या यह धरम-करम, यह राजपाट और हुकूमत सब इन मजदूरोंके हाथमें जानेवाली है ?

(१) यह क्या नाटक कर रहे हो, महाराज ?

(२) यही बात तो मैं भी कह रहा था, सरकार।

कामदार : (बात काटते हुए) चुप रहो मोत्या। तुम आज-कल बहुत मुँह लगते हो। अपना काम छोड़कर चाहे जहाँ मजाखबाजीमें लग जाते हो और तुम नौकरोंको ढूँढने के लिये हमें आना पड़े ?

(३) अरे नहीं, बापजी !

(४) तो मैं क्या करूँ ? रात दिन काम कर करके मरें और एक इधर

कामदार : (गुस्सेमें आकर) क्या वक रहे हो, वदतमीज ? किससे बात कर रहे हो ?

(मोती यह सुनकर एक पैरपर भार देकर ऐसा खड़ा होता है, मानों कामदारके शब्दोंका उसपर कोई असर ही न हो ।

महाराज : देखी, कामदार साव, एकी हेंकड़ी । भगवतीकी कृपाच समझो के आपसे कोई ज्यादा नी बोल्यो । म्हारे तो एने साँड और वेलमें जमा कर दियो हे । ऐसो हे यो जवान । वताओ अव आप । (१)

(मोती अव दूसरे पैर पर भार देकर खड़ा हो जाता है और मूछोंके वाल दातोंके बीच लेकर कतरता है । काटे हुए अवशेषोंको थू-थू करके थूँकनेका नाट्य करता है जिससे यह मालूम हो कि उसके ऊपर कामदार और महाराज के रोपका जरा भी असर नहीं है ।)

कामदार : (तमतमाकर) अरे, यह क्या ? तू अपने आपको क्या समझता है ? (पंदकी ओर मुँहकरके) समुंदरसिंग !

(नेपथ्यमें—जी, हाजिर आयो साव ।)

समुंदर : (आकर और इधर उधर देखकर) काँई होकम ? (२)

कामदार : (मोतीकी ओर इशारा करते हुए) इसको कान पकड़कर अंटे के बाहर कर दो ।

समुंदर : (कामदारसे) जो होकम !

चलो ! (मोतीसे)

(मोती निश्चल खड़ा रहता है ।

समुंदरसिंग मोत्याको कान पकड़कर और धका देते हुए ले जाता है।)

कामदार : हरामखोर कहींका !

(कामदार अपनेको सम्हालता है इस बीच)

से [illegible] लगता है और एक उधरसे । आदमी एकका नौकर रह सतका है । [illegible] बापका नौकर तो नहीं बन सकता ।

(१) देखी कामदार साहब, इसकी हेंकड़ी ? भगवतीकी कृपा ही समझो कि यह आपसे ज्यादह नहीं बोला । मुझे तो इसने सांड और बैलमें जमा कर [illegible] है । ऐसा है कि यह पट्ठा । बताइये अब आप ।

(२) क्या होकम ।

काम : क्या बात है समुंदरसिंह ?

समुं : बातबात तो फेर। पर आप जरा बाहर तो पधारो। (१)

काम : पर आखिर बात क्या है ? ऐसे घबराये हुए क्यों हो ? हाँफ क्यों रहे हो ? मालूम होता है जैसे डाकुओंने डाका डाल दिया हो।

समुंदर : डाकू होनरसे काई डरे हे ? में कोई कम डाकू हूँ। अकेलो ई सो डाकू होरको टेंटुवो घोंटी ने रख दूँ। पण ई डाकूहोरका बाप जमात बाँधी ने आर पधार्‍या हे ओको काँई इंतजाम ? (२)

महाराज : अरे पर या बात तो साफ़ साफ़ को के डाकूका बाप असा हे कूण ? (३)

समुंदर : अबी में चोपाल आड़ीसे मोत्याके ठीक करीने आई र्‍यो थो के भेर्‍यो बलाई राजलका नामसे अल्ड़ार्‍यो थो। में ने जो उनँग आँख दौड़ाई तो देख्यो के ओका घरका सामने पुलिसकी धाड़की धाड़ खड़ी हे। उणी धाड़ में एक घुड़सवार जवान अँग्रेजी टोपी पेरयोतको बी दिखाय हे। वी सब वाँ से इनंग ई चल पड्या हे। (४)

कामदार : (हँसकर) ये हैं डाकुओंके बाप! भई बात तो पते की है। लेकिन आने दो न। घबरानेकी बात ही क्या है ?

---

(१) बातबात तो फिर। पर आप ज़रा बाहर तो पधारिये।

(२) डाकुओंसे कोई डरता है ? मैं क्या कोई कम डाकू हूँ। मैं अकेला सौ डाकुओंका टेंटुवा घोंट कर रख दूं। लेकिन ये डाकुओंके बाप जमात बाँध कर आये हैं उनका क्या इंतजाम ?

(३) अरे पर यह बात तो साफ़ साफ़ कहो कि डाकुओंके बाप ये हैं कौन ?

(४) अभी मैं चौपालकी ओरसे आ रहा था मोत्याको ठीक करके, कि इतनेमें मैंने सुना कि भैंया बलाई राजलके नामसे ज़ोर ज़ोरसे चिल्ला रहा है। मैंने जो उधर आँख दौड़ाई, तो देखा कि उसके घरके सामने पुलिसकी धाड़की धाड़ खड़ी है। उसी धाड़में एक घुड़सवार जवान अँग्रेजी टोपी पहना हुआ भी दिखाई देता है। ये सब इधरकी ओर आनेके लिए ही चल पड़े हैं।

समुंदर : आप काँई वी को, माराज ! पण म्हारे तो वात नी जँचे हे। (विंगमें देखकर कुछ घवराते हुए) देखो में केतो थो नी, वी लोक याँच आया हे। म्हारे तो आसार कुछ अच्छा नजर नी आय हे। देखो में अबी जाऊँ हूँ। (जाता है।) (१)

महाराज : अणी समंदरके आज काँई होयो हे ? एको चेरो इत्तो फक्क क्यूँ हे ? आज तलक म्हारा देखवामें यो इत्तो घवरायो नजर नी आयो थो। (२)

कामदार : इसका मतलब ही यह है कि वात में जरूर कुछ अहमियत है। जरूर पुलिस यहाँ आई होगी। लेकिन वात यह है कि वगैर इतला दिये हुए पुलिस यहाँ आ कैसे सकती है ?

महाराज : तो क्यों फिकर करो हो, सरकार ! अगर आपणे भगवती सहाय हे तो कायकी हाय हाय हे ? भगवतीका दरवारमें सव आवे ने (हाथसे रुपया वजानेका इशारा करते हुए) अपणी खुराक लेई ने चल्या जाय हे। (३)

समुंदर : (प्रवेश करके) कामदार साव, वी पुलस सुपरडंड आया हे ने, आप के याद करे हे। (४)

कामदार : पुलिस सुप्रिंटेंडेंट ! सच ?

समुंदर : हाँ साव, सच ! (५)

---

(१) आप कुछ भी कहिये, महाराज ! पर मुझे तो यह वात नहीं जँचती है। देखो मैं कह रहा था न कि वे लोग यहीं आये हैं। मुझे तो आसार कुछ अच्छे नजर नहीं आते हैं। देखो, मैं अभी आता हूँ।

(२) इस समुंदरको आज हो क्या गया है ? इसका चेहरा इतना फक क्यों है ? आज तक मेरे देखनेमें यह इतना घवराया हुआ नजर नहीं आता था।

(३) तो क्यों फिकर करते हैं, सरकार अगर अपनेको भगवती सहाय है, तो काहेकी हाय हाय है ? भगवतीके दरवारमें सव आते हैं और अपनी खुराक लेकर चले जाते हैं।

(४) कामदार साहब, वे पुलिस सुपरिंटेंडेंट आये हैं और आपको याद करते हैं।

(५) हाँ साहब सच !

कामदार : क्या सोचूँ ? तुम राजलको लाये। तुमने उसे हुजूरको त.किया। वह भी अपने निजी फ़ायदेके लिये और अब तुम कहते हो मैं सोच लूँ सो किस बिना पर ? मैं क्यों चक्कीके पाटोंमें घुन जैसा सूँ ? तुम जानो। जैसा किया वैसा भरो !

समुन्दर : अरे कामदार साब, ऐसा से थोड़ी छूटोगा ? वो के हे ी के—रावणने सीता हरी बाँध्यो गयो समुद्र ! (१)

(महाराजका प्रवेश)

कामदार : (महाराजसे) कहो, महाराज, क्या बात है ?

महाराज : बात वाई हे जो समुंदरने की थी। वो सुपरडंट तो कोई से बात तगाद नी करे हे; ने आपके बुलाय हे। (२)

समुंदर : देखो, मेंनं क्यो थो नी के यूँ पल्ला झाड़ी ने काम नी चालया को। (३)

कामदार : फिर ?

महाराज : फिर क्या ! समुंदरसिंग हे तो आपणे डरच काय को ? एसा हाथ बतायगा जवान के सरपट भागेगो; सुपरडंट। ने फेर एका साथी बी तो कम गुदानी हे। जागीरभरमें तेलको मचै देगा माराज ! (४)

(कामदार चुप होकर दोनोंकी ओर साभिप्राय देखता है।)

महाराज : जाओ ठाकुरसाब ! खड़या काँई हो खंभ जेसा। करदो तेनात जगे-जगे अपणा जवान होर के ने बाँध दो नाका होरके। काँई ! (५)

जायगी। सोच लीजिये।

(१) अरे कामदार साहब, इस तरह थोड़े ही छूट सकेंगे आप ! वह कहते हैं न कि 'रावणने सीता हरी और बाँध्यो गयो समुद्र !'

(२) बात वही है जो समुन्दरने कही थी। वह सुप्रिंटेंडेंट तो किसीसे बात तक नहीं करता है। वह आप ही को बुला रहा है।

(३) देखिये, मैंने कहा था न कि यों पल्ला झाड़नेसे काम नहीं चलेगा।

(४) फिर क्या ! समुन्दरसिंग है तो अपनेको डर ही काहे का ! ऐसा हाथ बतावेगा जवान कि वह सुप्रिंटेंडेंट सरपट भागेगा ! और फिर इसके साथी भी तो कम जुदा नहीं हैं। जागीरभरमें तहलका मचा देंगे महाराज !

(५) अरे ठाकुर साहब ! खंभे जैसे क्या खड़े हैं ? कर दो तैनात

सुप्रि : सो तो उन्हें पहिले ही मिल चुकी है। मैं खुद भी तो उनके पास चल रहा हूँ न

कामदार : आप! पहिले मैं वर्दी दे दूँ। फिर आपको बुलवालूँगा।

सुप्रि : अजी नहीं मैं आपको बुलवाते बुलवाते थक गया। अब आप हमें क्या बुलवाइयेगा? शायद आप फिर भूल जाँय। आप तो अब हमारे साथ ही रहियेगा।

कामदार : नहीं, नहीं, साहब। ऐसा भी कहीं होता है? आप तशरीफ रखिये!

सुप्रि : (बातकाट कर) नहीं, नहीं, साहब, आप चलिये तो!

कामदार : अच्छा चलिये।

(मुहर्रिरसे)

सुप्रि : समुंदरसिंग और आप यहीं रहियेगा। (कामदार और वह जाता है। महाराज कुर्सी खींचकर)

महाराज : विराजो साब! एँ पधारो! (मुहर्रिर बैठता है और समुंदरसिंग पासकी बेंच टेढी करके उसपर बैठ जाता है। महाराज भी उसीके पास बैठकर अपना बटुआ निकालकर पान लगानेका नाट्य करता है।) (१)

मुहर्रिर : आप महाराज हैं?

महाराज : (हँसते हुए) यो ई, में तो गरीब ब्राह्मण हूँ। (२)

मुह : यहीं रहते हैं?

महा : जी हाँ यॉंईको च तो हूँ। आप कूण ठाकुर हो? (३)

मुह : मैं जी? मैं भी तो गरीब ब्राह्मण ही हूँ।

महाराज : बाजबी है। आज आप सब केसा पधान्या। शिकार विकार पे जाणा है कॉंई। (४)

---

(१) विराजिये साहब! इधर पधारिये!

(२) यही मैं तो गरीब ब्राह्मण हूँ।

(३) जी हाँ, यहींका ही तो हूँ। और आप कौन ठाकुर हैं?

(४) वाजबी है। आज आप सब कैसे पधारे? शिकार-विकार पर जाना है क्या?

बातोंमें काँई धर्‍यो है ? यो तो सब सिखायो पूत है। (१)

सुख: अच्छा ! (मुहर्रिरसे) मेरी बात में कुछ नहीं रखा है, आप उन फ़क़ीर बाबासे भी पूछ सकते हैं।

मुह: अच्छा ? कौन है बाहर ? फ़क़ीर बाबा को भेजो।

(अन्दरसे जी हाँ की आवाज़ और फ़क़ीर बाबा का प्रवेश)

मुह: सुखलाल, तुम जाओ अब !

(सुखलाल जाता है।)

मुह: फ़क़ीर बाबा, बोलो। तुम्हें क्या कहना है ?

समुंदर: अरे साब, यो तो खुद जागीर को मुलजिम है। अणीने ई राजल को मामलो खड़ो कियो है। यो तो दिखवाको फ़क़ीर है, पण दिल तो ज्वानको बड़ो रंगीलो रख्यो है। मेने आँखसे देख्यो है, पट्ठो राजल का पाछे चाय जद लग्यो ई रेतो ! यो खुद राजलके ले उड्यो है। और बस सारी जागीरमें जागीरदार ने हमारो नाम बदनाम करी रियो है। असली बदमाश तो यो ई है। (२)

मुहर्रिर: क्यों फ़क़ीर बाबा ?

(फ़क़ीर चुप रहता है।)

मुहर्रिर: क्यों बाबा, चुप क्यों हो ? क्या सोच रहे हो ?

फ़क़ीर: सोच रहा हूँ कि इंसानपर जब शैतान हावी होता है तो वह क्या गुल बिखेरता है ?

---

(१) अरे साहब, इस लौंडेके दूधके दाँतभी नहीं पड़े हैं। इसकी बातोंमें क्या रखा है ? यह तो सब खिसाया पूत है।

(२) अरे साहब, यह तो खुद जागीरका मुलजिम है। इसीने तो यह राजलका मामला खड़ा किया है। यह तो दिखनेका फ़क़ीर है पर दिल तो जवानका बड़ा रंगीला है। मैंने आँखसे देखा, पट्ठा राजल के पीछे जब देखो तब लगा ही रहता था। यह खुद राजलको उड़ा ले गया है। और बस सारी जागीरमें जागीरदार और हमारा नाम बदनाम कर रहा है। असली बदमाश तो यही है।

समुंदर : शैतान में हूँ के तुम ? याँ आईने हिंदू होर की वऊ बेटी उड़ा ले जाणो ने हिन्दूहोरके मुसलमान बनाणो या इंसानियत हे; के शैतानेतयत ? (१)

(सुप्रिंटेंडेंट और कामदारका प्रवेश)

फ़क़ीर : शैतान कौन है, यह बतलानेकी जरूरत ही नहीं होती। वह न तो फ़क़ीरके लिबासमें छिप सकता है और न अमीरके। औरतोंके पीछे फ़क़ीर लगा था या कि अमीर यह तो दुनियाँको रौशन है। राजलको फ़क़ीर उड़ा ले गया या कि इसी कमरेमें शैतानकी बन्दूककी गोली उड़ा ले गई यह सवाल है।

(समुन्दरसिंग "बन्दूककी गोली" सुनकर चौंकता है । यह चौंकना देखकर)

सुप्र : क्यों समुन्दरसिंग, क्यों चौंके ? क्या चूहा-वूहा है ?

समुन्दर : नी नी साब ! (२)

सुप्र : क्यों समुन्दरसिंग, ये बन्दूककी गोली और इसी कमरेमें, इसका मतलब क्या है ?

समुन्दर : यो तो थोई जाणे साब ! म्हारा समझसे तो आज एके गाँजा को दम ज्यादा चढ़ गयो दिखे ! (३)

फ़क़ीर : शराबसे कम; लोगोंकी जमीन हड़प करनेके नशेसे कम; और लोगोंको मारकर उनके खूनसे चढ़ी हुई मस्तीसे कम।

सुप्रि : क्यों समुंदरसिंग, यह क्या गड़बड़झाला है ?

(समुन्दरसिंग चुप रहता है)

सुप्रि : क्यों कामदार साहब, समुन्दरसिंग चुप क्यों है ?

कामदार : साहब, अब दोपहर हो गई है। थोड़ा खाना-वाना खा

---

(१) शैतान मैं हूं कि तुम ? यहाँ आकर हिन्दुओंकी बहू बेटियाँ उड़ा ले जाना और हिंदुओंको मुसलमान बनाना यह इंसानियत है कि शैतानियत ?

(२) नहीं, नहीं, साहब !

(३) यह तो वही जाने, साहब ! मेरी रायमें तो आज इसे गाँजेका दम ज्यादा चढ़ गया है।

सुप्रि : अच्छा ! मोती तुम कौन जात हो ?

मोती : मैं तो हुजूर बळाई हूँ। (१)

सुप्रि : तो तुम्हारा और मेरुका कुछ रिश्ता है ?

मोती : म्हारा जात भाई हे, हुजूर, वी ! (२)

सुप्रि : हाँ, तो मोती तुम्हें मालूम है राजल कहाँ मारी गई ?

मोती : काँ काँई ? यई, अणी जगे। आप वेठ्या हो नी वई वा मरी ने
...ड़ी थी। वाँ उणी खूण्याँमें ऊ पूजापाठको सामान रख्यो हे नी वाँई वन्दूक
...ली थी। ओके पकड़वा गई तो घोड़ो दब गयो ओर वा याँई आईने धड़ामसे
...गर पड़ी। (३)

सुप्रि : और कौन कौन था यहाँ उस वक्त ?

मोती : (कामदार और समुंदरसिंगको देखकर चुप रहता है।)

सुप्रि : देखो मोती, तुम्हें घबरानेकी जरूरत नहीं है। तुम बेधड़क
कह जाओ।

मोती : हुजूर, ई दोई था। ओर......(४)

सुप्रि : कौन, कौन ?

मोती : येई कामदार साव ओर समुंदरसिंगजी ! (५)

सुप्रि : और जागीरदार साहब भी थे न ?

मोती : नी हुजूर वी नी उणाँ अन्दरका बेठकमें था। ई समुंदरसिंग
ओके जबर्दस्ती वाँ पकड़के ले जावा लाग्या। तो राजल मूँड़ा आड़ी से बंदूक
पकड़के ओका कुन्दा से अणाँ के मारवा मँडी। जे के वजे से या वात हुई,

---

(१) हुजूर, मैं तो बलाई हूँ।

(२) मेरे जात भाई हैं हुजूर वे।

(३) कहाँ क्या ? यहीं इसी जगह। आप बैठे हैं न, वहीं वह मरकर
गिरी थी। यहीं उस कोनेमें—वह पूजा पाठका सामान रखा है न— वहीं
बन्दूक रखी थी। उसको पकड़ने गई तो घोड़ा दब गया और वह यहाँ आकर
धड़ामसे गिर पड़ी।

(४) हुजूर, ये दोनों थे।

(५) ये ही, कामदार साहब और समुंदरसिंगजी !

उसकी गड़ी हुई लाशका मुआयना करूँगा।

मुहर्रिर : जो हुक्म! चलो जी!

सुप्रि : देखना। उसका पंचनामा जरूर करा लीजियेगा।

मुहर्रिर : जी! (मुहर्रिर और मोती जाते हैं।)

सुप्रि : अच्छा, फ़क़ीर बाबा, आप अभी बाहर बैठिये। (फ़क़ीर जाता है।

सुप्रि : कहिये कामदार साहब! आप तो जागीरदार साहबके सामने खूब क़ानून बघार रहे थे कि हमारा बगैर सुबूतके यहाँ आकर जागीरदारके काममें दस्तंदाजी करना गैरक़ानूनी है। अब कहिये आपकी क्या राय है?

महाराज : अरे हुजूर, आप अणी ढेढ़की बात पर काँई विश्वास करो हो?

समुंदर : एके तो अणी फकीरने पट्टी पढाईने तयार कर्यो हे। बलाई बलाई सब एक होईने जागीरदारके बदनाम करवा को यो मोको ढूँढ्या हे। नी तो आप ई बताओ के यो मोत्यो, हमारा याँ को नोकर, भला हमाराई खिलाप केसे जबानी देतो? यो तो अणा फ़क़ीरने ओपर जादू कर्यो हे, जैसे ऊ बात बणाईने यूँ बोले हे। (१)

महाराज : (सुप्रिंटेंडेंट को पान हाज़िर करता है। सिगरेट पेश करके उसको सुलगाता है। आप तो नाहक परेशान होइर्या हो। (एक लिफ़ाफ़ा पेश करके) आप तो एके रखो, ओर अब तो दुपेर भी होई री हे। तो थोड़ो घणो खाणो पीणो करणो बी तो जरूरी हे केनी। (२)

सुप्रि : क्या है इसमें? (लिफ़ाफ़ा खोलकर) यह क्या? (पाँच हज़ार रुपये का नोट बतलाकर) पाँच हज़ार रुपये!

---

(१) इसको तो इस फ़क़ीरने पट्टी पढ़ाकर तैयार किया है। बलाई बलाई सब एक होकर जागीरदारको बदनाम करनेका यह मौक़ा ढूँढ़ रहे हैं। नहीं तो आप ही बताइये कि यह मोतया हमारे यहाँ का नौकर भला हमारे ही खिलाफ़ कैसे जबानी देता। यह तो इसी फ़क़ीरने उस पर जादू किया है, जिससे यह बात बनाकर यों बोल रहा है।

(२) आप इसे रखो और अब तो दोपहर हो रही है तो थोड़ा जलपान करना भी जरूरी है न?

महा : काफी हे, हुजूर अत्राई। आपको हुक्म होयगा तो आप जाओगा जद ओर बी पान बीड़ी पेश कराँगा हुजूर। असी बात थोड़ी हे। (१)

सुप्रि : नहीं जी, नहीं! हम ऐसी बात नहीं करते। (महाराजकी ओर लिफ़ाफेको फेंक कर।)

महा : (लिफ़ाफ़ेको उठाकर) अरे हुजूर यो तो जागीरदार साब ने खास आपणा हाथसे आपकी खातिरदारीका वास्ते लिफ़ाफ़ो भेज्यो हे। ओके तो आपके रखणोई पड़ेगा। नी तो जागीरदार सावके बोत बुरो लगेगा। अरे आप जेसा सरदार याँ आईने जागीरकी निगा रखो, जागीरदारके दो चार अच्छी बात सुणाओ, उणकी बी दो चार सुणो—अणी तरेसे तो दोईको मान-मरातब, रोबदाब रिआया पे बण्यो रेगा। नी तो भलाँ अणी फ़कीरड़ाकी ने ढेड़की बातमें आईने जागीरदारकी शिकायत सुणोगा, उणकी बात मानोगा ओर जागीरदारकी अणी खातिरदारीके पाँवसे ठुकराओगा तो भलाँ दुनियाँको काम केसे चलेगो? रिआया तो हर तरेसे जागीरदारके, ओर उणका आदमी के पाणीमें देख री हे। आप बी उणाँकी पीठ ठपकारोगा, तो ई म्हाँके भूणीने रा जायगा। में आपके सच के र्‍यो हूँ। लो लो। आप एके तो रखोव। नी गी एके तो आपके रखणोई पड़ेगा। (लिफ़ाफ़ेको सुप्रिंटेंडेंटकी जेबमें डाल कर) आपको होकम होयगा, तो या बात नी हे के हम खामोश रांगा। समझ्या। हम बी आदमी हाँ। बातके समझा हाँ। (२)

---

(१) काफ़ी हैं हुजूर इतने ही। आपका हुक्म होगा तो आप जावेंगे जब और भी पान बीड़ी पेश करेंगे, हुजूर। ऐसी बात थोड़ी है।

(२) अरे हुजूर, यह तो जागीरदार साहबने खास अपने हाथसे आपको खातिरदारीके लिये लिफ़ाफ़ा भेजा है। उसे तो आपको रखना ही होगा। नहीं तो जागीरदार साहबको बहुत बुरा लगेगा। अरे आप जैसे सरदार यहाँ आकर जागीरकी निगाह रखें, जागीरदारको दो चार अच्छी बातें सुनावें, उनकी भी दो चार सुनें—इसी तरहसे तो दोनोंका मान-मरातिब, रोब-दाब रिआया पर बना रहेगा। वर्ना इस फ़क़ीरकी और ढेड़की बातोंमें आकर जागीरदारकी शिकायत सुनोगे, उनकी बात मानोगे और जागीरदारकी इस खातिरदारीको पाँवसे ठुकराओगे तो भला दुनियाका काम कैसे चलेगा?

मुप्रि : अरे तो भाई, यह तो आप लोगोंकी बहुत ज़्यादती है। और (हलके स्वरमें) यह बात अब खाली मेरे हाथमें ही नहीं रह गई। वह जो राजलका भाई है उसकी रियासतके तमाम लीडरोंसे मुलाक़ात है। उन्होंने इस बातको ख़ास सरकारके पास पहुँचाया है। तब ख़ास दरबारने अपने हाथ से हुक्म देकर मुझको तफ़्तीशके लिए रवाना किया है। अगर आज मैं सही वाक़या हिज़हायनेसके सामने नहीं पेश करूँगा तो खुद मेरी जान आफ़त में नहीं आ जायगी ?

महाराज : हुज़ूर आली, मैं वातके समझूँ हूँ। और जद मैं अणी वातमें बीचमें पड़ गयो हूँ तो आप म्हारा इतमीनान पे रो। या म्हारी अरज है।......तफ़्तीश तो आप करी र्या हो और रपोट वी तो आप ई लिखोगा के नी ? (१)

मुप्रि : हाँ, हाँ।

महा : बस तो फेर। और वात रे काँ गई ? सुबूत कोई वी हो। पण ओंके आप जेसो पेश करोगा वेसोच होयगा। आप चाहो तो ओसे जागीरदारके बदनाम करा सको हो; नी तो अणी ढेढ़ और फक़ीरड़ा होनके फाँसी पे वी चढ़ा सको हो। यो तो सब आपकी कलम कोई खेल है। को हे के नी, आसदार साब ? (२)

काम : हाँ, हाँ !

महा : हाँ, हाँ, काँई ? रात और दन योई तो काम आप करो हो। आपके बी तो काँई ने काँई तो सलाह देणीच चइये। (१)

समुंदर : सलाहकी जरूरत ई नी हे। में तो तब से याई कूँ हूँ के अणी मामलामें असली गुनेगार ऊ फ़क़ीर ओर राजलको भाई हे। अणी वास्ते ऊ भाई उचक्यो हे। ओर फ़क़ीरकी हे राजलसे आशनाई। ओके ऊ उड़ाईने ले गयो हे। तो वा बात छिपावाके वास्ते ऊ तमाम जागीर माथा पे लेर्यो हे जवान। अब आप ई सोच लो। (२)

सुप्रिं : कौन यह फ़क़ीर ?

महा : हाँ हजूर, आप उणके काँई सीदो सादो समझ बेठ्या हो ? ऊ तो पक्को गुंडो हे गुंडो।(३)

सुप्रिं : अच्छा कौन है जी उधर। जरा फ़क़ीरको इधर भेजना।

(परदेमें "जी" की आवाज आती है। उसके बाद फ़क़ीर प्रवेश करता है।)

सुप्रिं : क्यों फ़क़ीर बाबा, तुम्हारी और राजलकी मुलाक़ात कैसे हुई ?

फ़क़ीर : यह सवाल आपने खूब पूछा ?

रदारको बदनाम करा सकते हो। वर्ना इस ढेढ़ और फ़क़ीरको फाँसी पर भी चढ़ा सकते हो। यह तो सब आपकी ही क़लमका खेल है। कहिये, है कि नहीं, कामदार साहब ?

(१) हाँ, हाँ, क्या ? रात और दिन यही तो काम करते हो आप। आपको भी तो कुछ न कुछ सलाह देना चाहिये।

(२) सलाहकी जरूरत ही नहीं है। मैं तो तबसे यही कह रहा हूँ कि इस मामलेमें असली गुनहगार यह फ़क़ीर और राजलका भाई है। उस मेन्याकी ज़मीन छिन गई। इसलिये वह भाई उचक रहा है। और फ़क़ीरकी है राजलसे आशनाई। उसको वह उड़ाकर ले गया है। वह बात छिपानेके लिये वह तमाम जागीरको सिरपर ले रहा है जवान ! अब आप ही सोचिये।

(३) हाँ हजूर, आप उसको क्या सीधा सादा समझ बैठे हैं। वह तो पक्का गुंडा है गुंडा।